Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
# हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 43 अंक-09
कल्पादि सम्वत् 1972949119

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 29 मई से 04 जून 2019 तक
ज्येष्ठ कृष्ण दशमी से ज्येष्ठ शुक्ल एकम् 2076 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

हरियाणा का सुन्दर... पृष्ठ- 3
उपयोगी बादाम... पृष्ठ- 4
प्रकृति के द्वारा.... पृष्ठ- 5
महाराणा प्रताप.. पृष्ठ- 8
चुनाव आयोग में... पृष्ठ- 12

- विश्वभर में भारतीय दर्शन के महान् प्रतिष्ठापक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् पर आरोपित ये कैसे काले धब्बे!!
- हिन्दू धर्म को मिटाने का यह एक खुला षड्यंत्र है।
- कश्मीर में आज भी अपनी जड़ जमाने में लगा हुआ है आईएस
- केदारनाथ यात्रा तो ठीक लेकिन राम मंदिर कब

## अखिल भारत हिन्दू महासभा साध्वी प्रज्ञा ठाकुर के बयान के साथ

• संवाददाता •

**भोपाल** से भाजपा प्रत्याशी साध्वी प्रज्ञा ठाकुर ने बयान दिया है जिसमें उन्होंने नाथूराम गोडसे को देशभक्त बताया है। साध्वी प्रज्ञा ने कहा कि गोडसे देशभक्त थे, देशभक्त हैं और देशभक्त रहेंगे। अखिल भारत हिन्दू महासभा ने प्रज्ञा के इस बयान का पुरजोर समर्थन करते हुए कहा कि अखिल भारत हिन्दू महासभा उनके साथ खड़ी है। साथ ही हिन्दू महासभा ने कमल हासन के बयान की निन्दा करते हुए कहा है कि ऐसे व्यक्ति को हिन्दुओं के देश में रहने का कोई अधिकार नहीं है। बता दें कि भोपाल से भारतीय जनता पार्टी की शेष पृष्ठ 10 पर

## अमेरिका ने कहा कि वह ईरान को तबाह कर देगा

• संवाददाता •

**वॉशिंगटन** और तेहरान के बीच तनाव बहुत बढ़ गया है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान को कठोर चेतावनी देते हुए कहा कि, यदि उसने अमेरिकी हितों पर हमला किया तो उसे तबाह कर दिया जाएगा। अमेरिका ने एक कैरियर ग्रुप तथा बी–५२ बॉम्बर को खाड़ी में तैनात कर दिया है। और ऐसे में डोनाल्ड ट्रंप के इस बयान से गंभीरता और बढ़ सकती है। डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को ट्वीट कर, 'ईरान को धमकी देते हुए लिखा, अगर ईरान लड़ना ही चाहता है तो यह उसका आधिकारिक तौर पर अंत होगा। अमेरिका को फिर कभी धमकी मत देना। वाशिंगटन में एक गुप्त रिपोर्ट के अनुसार, दोनों देशों के मध्य संभावित सैन्य टकराव को लेकर बहस छिड़ने पर ट्रंप के इस ट्वीट ने अमेरिका में इस डर को और हवा दे दी है, दोनों देश आपस में लड़ सकते हैं। अमेरिकी गुप्त रिपोर्ट के अनुसार ईरान अमेरिका के महत्वपूर्ण संस्थानों और संपत्ति को निशाना बना कर हमला कर सकता है। एक रिपोर्ट के अनुसार सुरक्षा अधिकार के हवाले से दावा किया है कि, फारस खाड़ी में ईरानी व्यापारिक जहाजों के जो ग्राफिक्स आये हैं उनको देखकर लगता है कि व्यापारिक जहाज की आड़ में युद्धपोत और मिसाइल ले जाया जा रहा है। हालांकि, अमेरिका को इस ओर से अब तक इसका कोई सबूत नहीं दिया है और हथियार ले जाने के अमेरिका के दावे की पुष्टि नहीं हुई शेष पृष्ठ 11 पर

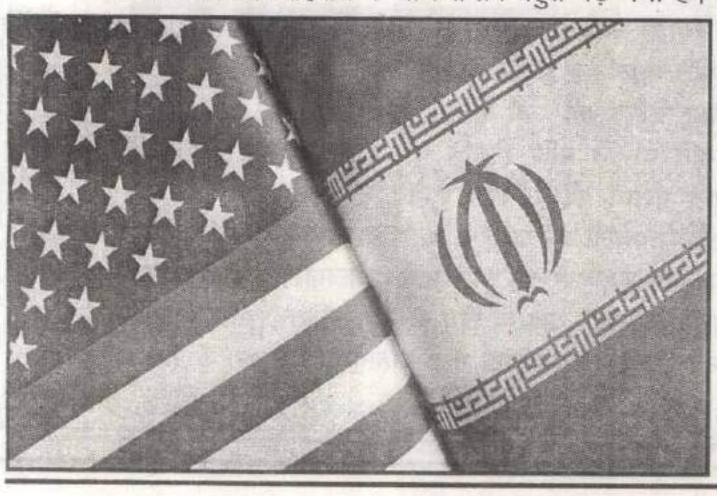

# हरियाणा का सुन्दर पर्यटन स्थल 'हथिनी कुण्ड'

✍ उर्मि कृष्ण

**यमुना** का नाम सदा कृष्ण के साथ की स्मृति जगाता है। यमुना की लहरों में कृष्ण का बालपन और उनकी प्रणय लीलाएँ हम सदा देखते–सुनते आए हैं। बड़ी श्रद्धा से जब भी 'जय यमुना मैया' कहते हैं तब इसके कृष्ण जल में कृष्ण का ही प्रतिबिम्ब देखते हैं। किन्तु इस बार फरवरी की मीठी धूप में हम ऐसे यमुना किनारे पहुँच गए जहाँ न कृष्ण, न मंदिर, न गोपियाँ, न कुंज गलियाँ ही थीं। यहाँ यमुना की शांत धारा बह रही थी। आसपास जंगल कुछ घना और शांत था। प्रदूषण रहित यमुना का शांत स्वच्छ जल मंद गति से बढ़ रहा था।

अम्बाला छावनी से मात्र ६० कि.मी. की दूरी पर स्थित इस स्थान का नाम 'हथिनी कुण्ड' है। यहाँ नाम के साथ कृष्ण, गउएँ, कुंज गोपिका, राधा कुछ न होते हुए भी 'हथिनी' नाम क्यों जुड़ा होगा यमुना के साथ। हम सब एक–दूसरे से पूछने लगे। कुण्ड भी कहीं नजर नहीं आ रहा था। 'हथिनी कुण्ड' हरियाणा का सुन्दरतम पर्यटन स्थल है। यहाँ सिंचाई विभाग का विश्राम भवन बना हुआ है जिसे अब हरियाणा सरकार के पर्यटन विभाग ने ले लिया है। कहते हैं कि एक बार यहाँ सम्राट अकबर की हथिनी डूब गई थी। तभी से इस जगह का नाम हथिनी कुण्ड पड़ गया। यहाँ की यमुना में हाथी–डूब पानी है। यहाँ अकबर के हाथी नहाया करते थे। विश्राम भवन के साथ ही एक सड़क बिलकुल यमुना कूल तक चली गई है। यह ट्रक वालों ने यहाँ का रेत और पत्थर भरने के लिए बनाई है। हम भी इसी रास्ते अपनी कार नदी किनारे तक ले गए। किनारे पर एक नाव टूटी–फूटी दशा में पड़ी थी। कभी यह नाव इस पार से उस पार चला करती थी। इस पार आजकल हरियाणा है और दूसरी ओर उत्तर प्रदेश का सहारनपुर जिला लगता है। अकबर का एक किला उसी ओर दिखाई देता है। उस पार कुछ ट्रक भी खडे थे जो यमुना से रेत भर रहे थे। कुछ मछुआरे मछली भी पकड़ रहे थे। दूर उत्तर प्रदेश का जंगल देखने में सुहावना लग रहा था। हालाँकि इस ओर हरियाणा का कलेसर जंगल अधिक घना है। यमुना किनारे का यह जंगल अब हरियाणा सरकार ने सुरक्षित घोषित कर दिया है। यह कलेसर जंगल अब पशु विहार है। यहाँ कई तरह के प्राणी अपना बसेरा किए हुए हैं। हिरन, बंदर, सियार, मोर हमने भी देखे। शेर से सामना न हो सका। सुनते हैं कभी शेर यहाँ रहा करते थे।

हम सब यमुना में पड़ी उस टूटी नाव पर आनन्द से चढ़ बैठे। सब इतने प्रसन्न थे मानो नाव में सैर कर रहे हों। किनारे का जल एक–दूसरे पर उछालने लगे। रेत में घरौंदा बनाने लगे। श्यामल जल के श्वेत पत्थरों को शिशु उत्साह से भर इकट्ठे करने लगे। गोल, चौकोर, अंडाकार, छोटे–बड़े पाषाणों से खेल रचाने लगे। एक नाव, वह भी टूटी दशा में–हमारे पर्यटक दल को उसमें बैठने की जगह नहीं मिल रही थी। पिकनिक मूड में सभी फैल–फैलकर बैठना चाहते हैं। मीठी धूप में कोई लेटना भी चाहते थे। हमारा सहायक ड्राइवर गया और चौकीदार की खाट उठा लाया। खाट नदी में उसने नाव से सटाकर बिछा दी। पति महोदय ने हँसते हुए नया मुहावरा कसा–नदी नाव संयोग नहीं, नाव खाट संयोग। सब खूब हँस पड़े और दौड़कर बहुतों ने खाट पर अधिकार जमा लिया। विश्राम भवन के चौकीदार ने हम सभी की चाय और भोजन इसी नाव और खाट पर लाकर खिला दिया। इस भोजन में न हरियाणा का दूध था न यमुना किनारे का शेष पृष्ठ 11 पर

# साप्ताहिक राशिफल

**मेष :** इस सप्ताह आप कुछ कार्यो को लेकर आप असमंजस की स्थिति में पड़ सकते है। आर्थिक समस्याओं को समाधान करने के लिए आपको कठोर श्रम करना पड़ेगा। आपकी स्वतन्त्र विचारधारा मुश्किलों को आसान कर देगी। बिना मांगे राय देना आपके लिए हितकर नहीं है।

**वृष :** नई योजनाओं के प्रति मन उत्साहित रहेगा परन्तु अपने ही अड़गा भी लगा सकते है। पड़ोसियों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने की जरूरत है। वाणी में नियन्त्रण रखने से मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। रिश्तों को ढोने से बेहतर है कि उन्हें तिलांजलि दे दे।

**मिथुन :** इस सप्ताह आपको किसी से लाभ लेने का मौका मिलेगा परन्तु आपका स्वाभिमान ऐसा करने नहीं देगा। आप यदि गैर सरकारी संस्था बनाने चाहते है, तो किसी नजदीकी व्यक्ति को महत्वपूर्ण पद न दें अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा।

**कर्क :** सन्तान के व्यवहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे। छात्र अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें वरना विवाद हो सकता है।

**सिंह :** इस सप्ताह रोजी व रोजगार से जुड़े मामलों में प्रगति होगी। कार्य योजनाओं पर विशेष फोकस करने की आवश्यकता है। पारिवारिक रिश्तों में मधुरता बनायें रखने के लिये आपको ही त्याग करना पड़ेगा। सामाजिक सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

**कन्या :** इस सप्ताह सामाजिक सम्बन्धों को निभाने के लिए आपको काफी मशक्कत करनी पड़ेगी। किसी की कमियों को न देंखे बल्कि उसकी अच्छाईयों पर ध्यान दें। आप यह न सोंचे कि आपकी किस गल्ती के कारण यह मुश्किल पैदा हुयी है।

**तुला :** आपकी असमंजस वाली स्थिति इस सप्ताह आपको मुसीबत में डाल सकती है, अतः इस पर नियन्त्रण करने का प्रयास करें। मित्रों के साथ अत्यधिक समय न बितायें अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होने की आशंका है।

**वृश्चिक :** कुछ लोगों की इस सप्ताह मनः स्थिति अनियन्त्रित हो सकती है। राजनैतिक लोगों को दूर की यात्रा करनी पड़ सकती है। धैर्य व साहस ही आपकी पहचान है इसे बरकरार बनायें रखना अतिआवश्यक है। सन्तान के साथ अत्यधिक वार्तालाप न करें।

**धनु :** परिवार में सभी लोगों की अपनी अलग–अलग सीमायें तय होती है। उस सीमा को लाघनें का प्रयास न करें। जरूरी नहीं कि हर बात पर आपका ही अधिकार चलें। आप अपने कार्यो को अपना कर्तव्य समझे तभी आपको तसल्ली होगी।

**मकर :** इस सप्ताह आपके मन में सन्तान के प्रति उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं। मनचाही वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए अभी कठोर श्रम करने की जरूरत है। रूके हुये धन के प्रति सक्रियता बनायें रखें। छात्र अपने दोस्तों से ज्यादा वफादारी निभायें।

**कुम्भ :** इस सप्ताह कुछ लोगों के करियर व व्यवसाय में प्रगति होने की सम्भावना है। अर्थ की योजनायें फलीभूत होगी। व्यवसायी वर्ग अपना लेखा–जोखा मेनटेन रखें अन्यथा हल्का सा तनाव हो सकता है।

**मीन :** इस सप्ताह नयें लोग जीविका को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे। नवयुवक अपने इष्ट मित्रो के कारण तनावग्रस्त हो सकते है। धन के मामलें में व्यर्थ की चिन्ता बनी रहेगी। छात्र अपने माता–पिता से कुछ भी न छिपायें अन्यथा मुसीबत में फस सकते है। **पं० दीनानाथ तिवारी**

# श्रीरामचरितमानस

**धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई।।**
**भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी।।**

धुआँ भी अगर के संग से सुगन्धित होकर अपने स्वाभाविक कड़ुवेपन को छोड़ देता है। मेरी कविता अवश्य भद्दी है, परन्तु इसमें जगत् का कल्याण करने वाली रामकथा रूपी उत्तम वस्तु का वर्णन किया गया है। इससे यह भी अच्छी ही समझी जायेगी।।५।।

**छ.० - मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।**
**गति कूर कविता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की।।**
**प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होदहि सुजन मन भावनी।**
**भव अंग भूति मसान की सुमिरन सुहावनि पावनी।।**

तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीरघुनाथजी की कथा कल्याण करने वाली और कलियुग के पापों को हरने वाली है। मेरी इस भद्दी कवितारूपी नदी की चाल पवित्र जलवाली नदी (गंगाजी) की चाल की भाँति टेढ़ी है। प्रभु श्रीरघुनाथजी के सुन्दर यश के संग से यह कविता सुन्दर तथा सज्जनों के मन को भाने वाली हो जायेगी। शमशान की अपवित्र राख भी श्रीमहादेवजी के अंग के संग से सुहावनी लगती है और स्मरण करते ही पवित्र करने वाली होती है।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 29 मई से 04 जून 2019 तक

अध्यक्षीय

# केदारनाथ यात्रा तो ठीक लेकिन राम मंदिर कब

**लोकसभा** चुनाव के आखिरी चरण के मतदान के शोर से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उत्तराखंड के केदारनाथ और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह सोमनाथ मंदिर में जाकर पूजा–अर्चना और साधना की। प्रधानमंत्री ने यहां पूजा–अर्चना की और उसके बाद गुफा में ध्यान किया। दोनों नेताओं के इस कदम की अखिल भारत हिन्दू महासभा ने जहां प्रशंसा की है वहीं यह सवाल किया है कि कई दशकों से लटके राम मंदिर निर्माण को लेकर भाजपा ने अबतक क्या किया है। अखिल भारत हिन्दू महासभा ने कहा है कि हिन्दुत्व और आस्था के नाम पर भाजपा वोट तो ले लेती है लेकिन उसने राम जन्मभूमि, कृष्ण जन्मभूमि और ज्ञानवापी को लेकर अब तक कोई भी कदम उठाने से परहेज क्यों किया है। खैर! करीब १७ घंटे की साधना के बाद जब पीएम गुफा से बाहर निकले तो कई संदेश दिए। फिर चाहे वह संदेश हो या हिंदुत्व का के दिन फिर मतदान विश्वनाथ की केदारनाथ से को साधना। नगरी काशी ही प्रधानमंत्री बीते दिनों भले की ये यात्रा विपक्ष और सोशल मीडिया के निशाने पर हो, लेकिन नरेंद्र मोदी ने इस एक यात्रा से कई निशाने साधे। प्रधानमंत्री की केदारनाथ यात्रा चर्चा का विषय रही। चुनाव प्रचार के दौरान कई ऐसे मौके आए जब नेता मंदिर–मस्जिद में माथा टेक रहे थे। लेकिन जब वाराणसी में मतदान होना था, तो उससे पहले चुनाव प्रचार को खत्म कर पीएम केदारनाथ पहुंचे। यहां उन्होंने विधि–विधान से पूजा अर्चना की और बाद में गुफा में ध्यान लगाने चले गए। गुजरात विधानसभा चुनाव के बाद से ही देखने को मिला है नेता मंदिर–मंदिर जाते हैं और हिंदुत्व के मुद्दे पर आगे बढ़ते हैं। चुनाव के दौरान कांग्रेस का सॉफ्ट हिंदुत्व भी मुद्दा बना है इस बीच प्रधानमंत्री ने हर बार भगवा धारण कर एक अलग ही संदेश दिया है। १७ तारीख को चुनाव प्रचार खत्म हुआ। लेकिन पीएम काशी नहीं पहुंचे थे, प्रधानमंत्री दो दिन से केदारनाथ में हैं। ऐसे में बाबा केदारनाथ की धरती से पीएम ने विश्वनाथ की नगरी को संदेश दिया। भले ही इसे चुनाव प्रचार में नहीं जोड़ा जाएगा, लेकिन बीते दिनो में उनकी तस्वीरें टीवी और सोशल मीडिया में छाई रहीं, ऐसे में एक बार फिर मुद्दा पीएम नरेंद्र मोदी ही रहे. विपक्ष इस पर भी निशाना साधा इसे चुनाव प्रचार का तरीका माना है। केदारनाथ में तापमान ५ डिग्री से भी कम है, उसके बावजूद प्रधानमंत्री करीब १७ घंटे तक गुफा में साधना करते रहे। लगातार चुनाव प्रचार, एक दिन में ४–५ रैलियां और अब प्रचार खत्म होते ही पहाड़ की चढ़ाई पीएम ने एक बार फिर अपने समर्थकों को मोहित करने का काम किया है। केदारनाथ की वादियों में घूम प्रधानमंत्री ने लोगों से अपील की है कि विदेश में घूमने से पहले लोगों को अपना देश घूमना चाहिए। उन्होंने कहा कि लगातार यहां पर रेनोवेशन का काम चल रहा है और जो लोग विदेश में घूमने जाते हैं उन्हें यहां पहाड़ों में आना चाहिए।

**राष्ट्रीय उद्बोधन**
**चन्द्र प्रकाश कौशिक**
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

# कश्मीर में आज भी अपनी जड़ जमाने में लगा हुआ है आईएस

**कश्मीर** में धीरे–धीरे आतंकवाद आज भी अपनी जड़ें जमाने में लगा हुआ है। कश्मीर में पिछले दिनों मारे गए एक आतंकी के संबंध आईएस से होने व संगठन का भारत में नयां प्रांत बनाने का ऐलान चिंता जाहिर कर रहा है। हालांकि, पुलिस का दावा है कि घाटी में आईएस की मौजूदगी नहीं है। फिर भी इसका मतलब यह नहीं कि हम चैन से बैठ जाएं। खूंखार आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट ने कुछ ही दिनों पहले श्रीलंका में हुए हमलों की जिम्मेदारी के बाद भारत में अपनी जड़ें जमाने का दावा किया है। दहशतगर्द संगठन ने एक अलग नए प्रांत का ऐलान किया है, जिसके जरिए वह भारतीय उपमहाद्वीप पर फोकस करेगा। यही नहीं आतंकी संगठन ने इसकी एक तस्वीर भी जारी की है और दावा किया है कि पिछले दिनों कश्मीर में सुरक्षाबलों के साथ हुई मुठभेड़ में ढेर हुआ आतंकी इशफाक अहमद सोफी भी उसके संगठन से जुड़ा था। हालांकि जम्मू– कश्मीर पुलिस ने कहा कि सोफी इस्लामिक स्टेट जम्मू–कश्मीर का आखिरी जीवित सदस्य था, जिसकी मौत के बाद से घाटी में आईएस का सफाया हो गया है। बता दें कि इस्लामिक स्टेट ने अपने बयान में विलाय–ए– हिंद यानी भारतीय प्रांत का जिक्र किया है, लेकिन जम्मू–कश्मीर का जिक्र नहीं किया है। आतंकी संगठन से जुड़े कुछ लोगों ने एजेंसियों को पूछताछ के दौरान भी इस संबंध में जानकारी दी थी। हालांकि आईएस के कब्जे में किसी प्रांत के न होने या फिर प्रभाव तक होने के बावजूद उसका इस तरह का बयान बड़बोलापन ही लगता है। कश्मीर में आईएस की मौजूदगी और अलग प्रांत बनाने की संभावनाओं को तब बल मिला था, जब हालांकि हाल ही में इस्लामिक स्टेट के सरगना अबू बकर अल–बगदादी का एक नया वीडियो सामने आया था। इस वीडियो में सरगना दहशतगर्द संगठन के प्रभाव वाले नए इलाकों के बारे में बात करता दिख रहा है। ऐसे में इस्लामिक स्टेट के इस बयान को पूरी तरह से खारिज भी नहीं किया जा सकता है। सूत्रों के मुताबिक अब तक इस्लामिक स्टेट खोरासान प्रांत का जिक्र करता रहा है। इसके जरिए वह अफगानिस्तान और उसके पड़ोस के इलाके में गतिविधियां बढ़ाता रहा है, लेकिन अब उसने इस बात के संकेत दिए हैं कि वह सीधे तौर पर जम्मू–कश्मीर में दखल देने की कोशिश में है और यहां आतंकियों से सीधी डीलिंग की कोशिश कर सकता है। पुलिस यह मानती है की घाटी में ऐसी विचारधार को फैलाने के लिए कुछ तत्व कोशिश में लगे हैं, लेकिन पुलिस नहीं मान रही है कि इस विचारधार से जुड़े आतंकी संगठन आईएसआईएस की पकड़ कश्मीर में मजबूत है। राज्य के डीजीपी के मुताबिक, कश्मीर में आईएसआईएस की मौजूदगी ज्यादा नहीं है। हालांकि युवाओं के एक वर्ग को इस विचाधारा के साथ जोड़ने की पूरी कोशिश हो रही है। पुलिस का यह बयान कश्मीर घाटी में आतंकी संगठन आईएस को लेकर चल रही खबरों को खारिज करने से कहीं ज्यादा खुद के बचाव का है। घाटी की पुलिस आज से नहीं, बल्कि तब से आईएसआईएस की मौजूदगी को खारिज कर रही है, जब से सीरिया में यह संगठन अपने चरम पर था। लेकिन पुलिस की यह कोशिश कहीं घाटी में किसी बड़े खतरे को अनदेखा तो नहीं कर रही, इस पर भी विचार करना होगा।

**राष्ट्रीय आह्वान**
**मुन्ना कुमार शर्मा**
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

# उपयोगी बादाम और काली मिर्च

✍ रोहित यादव

**बादाम** के पेड़, पहाड़ों तथा इससे लगती जमीन पर पाए जाते हैं, पत्ते चौड़े, लम्बे तथा नरम होते हैं। इसके काण्ड स्थूल होते हैं। इसका फल गोल होता है। फल का आवरण सख्त होता है। फल के अंदर की गिरी (मिंगी) को बादाम कहा जाता है। आयुर्वेद में बादाम को गरम, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, भारी तथा वातनाशक बताया गया है, जो रक्तपित्त वाले रोगियों के लिए नुकसान देने वाली भी होती है।। इसे संस्कृत में वाताद, वातबैरी, बादाम, हिन्दी में बादाम, बंगाली में बदाम, उर्दू, गुजराती तथा मराठी में बादाम व बदाम, फारसी में बदाम शोरी, अरबी में बदाम तल्ख तथा अंग्रेजी में आलमंड कहते हैं। इसका लैटिन नाम प्रून्स एमिगडेलस तथा एमिगडेलस कम्युनीज है।

बादाम को आयुर्वेद में औषधीय एवं ताकत देने वाला बताया गया है। इसे मसाले के रूप में बिरयानी, कोरमा आदि में प्रमुखता से उपयोग में लाया जाता है। इसको मिठाई, हलवा, शर्बत तथा खाद्य पदार्थों में डालने की भी परम्परा है। आयुर्वेद में इसे गर्म–तर बताया गया है। इसे भिगोकर इसका छिल्का उतार लिया जाए, तो यह समयानुकूल हो जाता है। बादाम शारीरिक व मानसिक शक्ति को बढ़ाता है। इसके

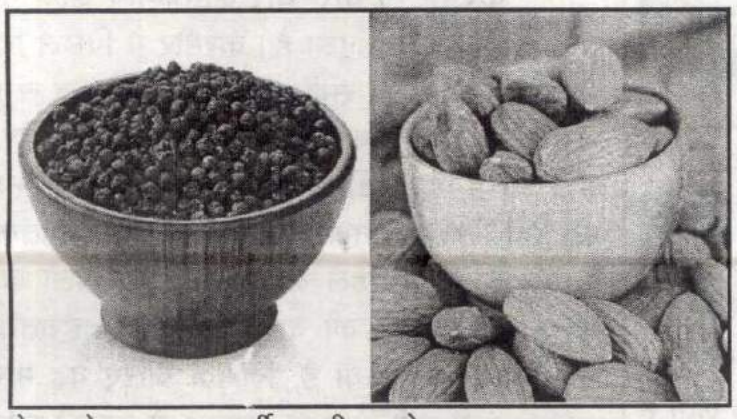

सेवन से रक्त तथा चर्बी बढ़ती है। शरीर को मोटा करता है। मुख पर कांति लाता है। वीर्य को गाढ़ा करता है और पौरुष शक्ति को बढ़ाता है। इसका तेल बुद्धिवर्द्धक, वाजीकरण एवं मस्तिष्क–विकार नाशक है। इसके तेल की सिर में मालिश की जाए, तो स्मरण शक्ति बढ़ती है। बादामपाक को शीत ऋतु में सेवन करना, अमृततुल्य माना गया है।

ज्ञानेन्द्रियों के लिए बादाम को बहुत लाभदायक माना गया है, जो मस्तिष्क, स्मरणशक्ति तथा आँखों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है। यह भारी है, इसी कारण देर से हजम होता है। आँतों के लिए हानिकारक माना गया है। इसके दोष को दूर करने के लिए शक्कर तथा मिश्री का सेवन करना चाहिए। इसमें अनेक औषधीय गुण पाए जाते हैं। इसके सेवन से आँखों के सभी विकार दूर होते हैं और दृष्टि तेज होती है। यह सुजाक रोग में भी बहुत लाभकारी है तथा इससे पेशाब की जलन बंद होती है। इसका सेवन दाँतों को मजबूती देता है तथा तोतलापन दूर होता है। इसे शहद के साथ सेवन करने से मुख पर कांति आती है। यह कमजोरी, चक्कर आदि को दूर करता है। कमर पर इसके तेल की मालिश की जाए, तो कमर दर्द जल्द दूर होता है और सफेद दाग में भी फायदा होता है। शहद के साथ इसके सेवन से पागल कुत्ते का जहर नष्ट होता है। इसके छिलके की राख में नमक मिलाकर, दाँतों पर मलने से दाँत साफ होते हैं और चमकने लगते हैं। यह मूत्राधिवय में बहुत लाभकारी है। इसके गुणों का बखान इस दोहे में यूँ किया गया है–

**जब शरीर कमजोर हो,**
**खाओ तुम बादाम।**
**चक्कर आना बंद हो, नेत्र**
**रोग दे थाम।।**

काली मिर्च बहुत ही गुणकारी है। इसी कारण इसे मसाले के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इसमें एंटीबायोटिक गुण होने के कारण आयुर्वेद के अधिकांश नुस्खों व योगों में इसका मिश्रण किया जाता है। इसको हिन्दी, उर्दू, गुजराती में काली मिर्च या स्याह मिर्च, मराठी में मिरे, बंगाली में गोल मिर्च, तेलगु में मरिचम, संस्कृत में पवित, श्याम वेणुज, शिरोवत, वृतफल, यवनप्रिय, कटुक, वल्लिज, फारसी में फिल–फिल अस्वद, तमिल में अस्सि तथा अंग्रेजी में ब्लैक पेपर कहते हैं। यह लता जाति की वनस्पति है। यह धरती पर लेटी हुई होती है या किसी पेड़ का सहारा लेकर उस पर चढ़ जाती है। इसके पत्ते लम्बे, चौड़े तथा लट्टू की आकृति के होते हैं। इसके पुष्प छोटे एकलिंगी, श्वेत–धूसर रंग के होते हैं। इसके बीज कच्ची अवस्था में हरे होते हैं, जो सूखने पर काले रंग के झुर्रीदार तथा गोल रूप में हो जाते हैं। इन्हीं बीजों को काली मिर्च कहा जाता है। इनमें भीनी–भीनी रुचिकर गंध आती है, जो इसमें मौजूद एक तेल के कारण आती है।

काली मिर्च स्वाद में चटपटी, तेज, तीक्ष्ण, उष्ण, तिक्त, वात–कफनाशक, पित्तकारक, कफ को दूर करने वाली, पसीना लाने वाली और पचने में हल्की है। पेट तथा घाव के कीड़ों को मारती है। यह खाने में रुचि पैदा करने वाली, हृदय रोग में लाभकारी, नेत्र, नाक तथा सिर के रोग में लाभ पहुँचाने वाली मानी गई है। काली मिर्च का नियमित सेवन करने से भूख बढ़ती है और हाजमा ठीक रहता है। शहद के साथ इसे खाने से आमाशय और यकृत की बादी नष्ट होती है। इससे खट्टी डकारें आनी बंद हो जाती हैं। इसे दाँतों की पीड़ामें भी लाभकारी माना गया है। यह उदर तथा कलेजे को बल देती है। आयुर्वेद में इसे गर्म व शुष्क बताया गया है। इसका चेहरे पर फल तेज लाने, अफारे को दूर करने, डकार लाने वाला होता है। यह पक्षाघात तथा कष्टप्रद मासिक धर्म में लाभ देने वाली है। इसको पीसकर, तेल के साथ मिलाकर लकवे वाले भाग पर लेप करने से फायदा पहुँचता है।

काली मिर्च, जुकाम में बहुत काम आती है। गर्म दूध या चाय में इसका चूर्ण मिलाकर सेवन किया जाए, तो बहुत लाभ मिलता है। यह जुकाम की हानिरहित उत्तम औषधि है। देहात में इस नुस्खे का आम प्रचलन है। इसके सेवन से चेहरे के कील–मुँहासे तथा झुर्रियाँ

शेष पृष्ठ 11 पर

# गन्ने के रस के औषधीय गुण

दीपल सिंह

गन्ने के रस में स्वाद के साथ–साथ सेहत भी है। यह आपको कई बीमारियों से सुरक्षित रखने के साथ ही आपकी त्वचा को भी निखारता है। गन्ने का रस बहुत ही सेहतमंद और गुणकारी पेय है। इसमें कैल्शियम, पोटैशियम, आयरन, मैग्नीशियम और फॉस्फोरस जैसे आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। इनसे हड्डियाँ मजबूत बनती हैं और दाँतों की समस्या भी कम होती है। गन्ने के रस के ये पोषक तत्व शरीर में खून के बहाव को भी सही रखते हैं। वहीं इस रस में कैंसर व मधुमेह जैसी जानलेवा बीमारियों से लड़ने की ताकत भी होती है।

**कैंसर से बचाव :** गन्ने के रस में कैल्शियम, पोटैशियम, आयरन और मैग्नीशियम की मात्रा इसके स्वाद को क्षारीय (खारा) करती है। इस रस में मौजूद यह तत्व हमें कैंसर से बचाते हैं। गन्ने का रस कई तरह के कैंसर से लड़ने में सहायक है। प्रोस्टेट और स्तन (ब्रेस्ट) कैंसर से लड़ने में भी इसे कारगर माना जाता है।

**पाचन को ठीक रखता है :** गन्ने के रस में पोटैशियम की अधिक मात्रा होने की वजह से यह शरीर के पाचनतंत्र के लिए बहुत फायदेमंद है। यह पाचन सही रखने के साथ–साथ पेट में संक्रमण होने से भी बचाता है। गन्ने का रस कब्ज की समस्या को भी दूर करता है।

**हृदय रोगों से बचाव :** यह रस दिल की बीमारियों जैसे दिल के दौरे के लिए भी बचावकारी है। गन्ने के रस से शरीर में कोलेस्ट्रॉल और ट्राईग्लिसराइड का स्तर गिरता है। इस तरह धमनियों में फैट नहीं जमता और दिल व शरीर के अंगों के बीच खून का बहाव अच्छा रहता है।

**वजन कम करने में सहायक :** गन्ने का रस शरीर में प्राकृतिक शक्कर पहुँचाकर और खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करके आपका वजन कम करने में सहायक होता है। इस रस में घुलनशील फाइबर होने के कारण वजन संतुलित रहता है।

**डायबिटीज का इलाज :** गन्ना स्वाद में मीठा और प्राकृतिक शुगर से भरपूर होता है। इसमें कम ग्लाइसीमिक इंडेक्स की वजह से मधुमेह के रोगियों के लिए अच्छा होता है।

**त्वचा में निखार लाता है :** गन्ने के रस में अल्फा हाइड्रॉक्सी एसिड पदार्थ होता है, जो त्वचा सम्बन्धित परेशानियों को दूर करता है और इसमें कसाव लेकर आता है। AHA मुंहासे से भी राहत पहुँचाता है, त्वचा के दाग कम करता है, त्वचा को नमी देकर झुर्रियाँ कम करता है, गन्ने के रस को त्वचा पर लगाएँ और सूखने के बाद पानी से धो लें, बस इतना प्रयोग करने पर ही आपकी त्वचा खिली–खिली और साफ नजर आएगी।

# प्रकृति के द्वारा फसलों एवं पेड़ों का पोषण

✍ सुभाष पालेकर

**कोई** भी पौधा या पेड़ अपने बढ़ने के लिए और फल देने के लिए जो कुछ लेता है, उसका ६८.५: हिस्सा हवा, पानी और सूरज की रोशनी से लेता है। हवा में से कार्बनडाइ ऑक्साइड वायु पेड़ या पौधे अपने आप लेते हैं, हमें देना नहीं पड़ता। जड़ें, जल भूमि से लेती हैं, जो भूमि में मानसून की वर्षा से जमा होता है। मानसून वर्षा का जल मुफ्त में देता है, जिसका बिल हमें चुकाना नहीं पड़ता। सूरज की रोशनी को पेड़, या पौधों के पत्ते सूरज से अपने आप लेती हैं, हमें देना नहीं पड़ता। याने पेड़ या फलों को निसर्ग या प्रकृति बढ़ाती है, फल प्रकृति देती है, हम नहीं। पेड़ या फसलों की जड़ें भूमि से नाइट्रेट के रूप में नत्र (नाइट्रोजन) लेती हैं। भूमि में यह नत्र हवा से जमा होता है। हवा में ७८.६ प्रतिशत नाइट्रोजन होता है। यह काम रायझोबियम जैस जीवाणु करते हैं, जो मूंग, फली,

उड़द, चना, तुवर जैसे दलहन फसलों की जड़ों में निवास करते हैं और हवा में से नत्र लेकर पौधों को या पेड़ों को बढ़ाने के लिए देते हैं।

इसका मतलब यह है कि अगर हम धान की फसल लेने के पहले धान फसल को काटते ही दलहन, चना, बींस जैसे रबी फसल उसी नमी पर लेते हैं, तब अगले मौसम में लगाई धान की फसल को आवश्ययक नत्र अपने आप भूमि में जमा होगा, जो उसे मिल जाता है। फिर ऊपर से यूरिया डालना नहीं पड़ता। हवा में ७८.६ प्रतिशत नत्र होता है।

अगर ज्वार या मक्के के ४ किलो बीज के साथ चवली के (Cowpea) लोबीया या उड़द के दो किलो बीज मिलाकर बोइए। तब यूरिया नहीं देना पड़ता। कपास के दो पौधों के बीच कपास के बीज बोते समय चवली लोबिया या उड़द के बीज बोना है। तब कपास को यूरिया नहीं देना पड़ता। मिर्ची, भिंडी, बैंगन, टमाटर, ग्वार आदि सब्जी–फसलों के दो पौधे के बीच लोबिया, उड़द, बीन्स या चना जैसे कोई भी दलहन के बीज बोते हैं तो इन फसलों को यूरिया नहीं देना पड़ता।

कोई भी फल–पौधा लगाना हो तो उसके पास तीन–चार लोबिया या उड़द–चने के पौधे और झंडू का पौधा लगाना चाहिए और हर साल जून में लोबिया और झंडू लगाना है। तब फल पेड़ों को यूरिया नहीं देना पड़ता। गन्ना लगाते समय ही गन्ने के पौधे कपास लोबिया या उड़द, चना जैसे दलहन के बीज बोना चाहिए। गन्ने को यूरिया नहीं देना पड़ता। केले के बीज लगाते समय ही दो तीन चवली के, दलहन में उड़द, चना के बीज बो दें। दो केले के पौधों के बीचोंबीच सहजना का बीज या स्टीक लगा दें और एक–दो झेंडू के पौधे लगा दें तो केले के पौधे को यूरिया नहीं देना पड़ता।

निसर्ग कृषि में हमें सुपर फॉस्फेट, पोटाश एवं अन्य कॉपर, जिंक, मॉलीब्डेनम या फेरस सल्फेट नहीं देना है। हमारी भूमि अन्नपूर्णा है। सभी अन्न तत्व भूमि में बेशुमार मात्रा में स्थित है। लेकिन जो है वह पका हुआ नहीं है। याने फसलों के या फल पेड़ों के जड़ों जिस स्थिति में चाहिए, उस स्थिति में नहीं है। यह पकाने काम अनन्त जीव–जन्तु करते हैं। ये जीव–जन्तु देशी गाय के गोबर में परार्ध या करोड़ों की संख्या में होते हैं। भूमि पर पानी के साथ जीवामृत देने से ये जीव–जन्तु भूमि में पकने लगते हैं और पककर फॉस्फेट, पोटाश, कॉपर, जिंक, लौह, बोरॉन आदि सभी अन्न तत्वों को जड़ों को पहुँचा देते हैं। निसर्ग कृषि में जीवामृत का प्रयोग करने के बाद यह कार्य अपने आप चालू होता है। हमें किसी भी फसल को ऊपर से कोई भी उर्वरक नहीं डालना पड़ता। हमारे हजारों लाखों किसान ऊपर से कुछ भी उर्वरक भूमि में नहीं डालते, लेकिन उनकी कृषि उपज आपसे कम नहीं, ज्यादा है। भूमि अन्नपूर्णा है। भूमि के अन्दर आप जितना गहराई में जाएँ, उतनी ही ज्यादा मात्रा में फसलों को जो अन्न तत्व खाद्यान्न चाहिए, वे ज्यादा से ज्यादा बढ़ती मात्रा में मौजूद होते हैं। यह गहराई की मिट्टी ऊपर भूमि के सतह पर केंचुवे अपने विष्टा के माध्यम से लाकर डालते हैं। उनका यह काम चौबीस घंटे चलता है। इस विष्टा में फसलों के लिए या फल पेड़ों के लिए आवश्यक सभी अन्न तत्व जड़ों को उपलब्ध स्थिति में चाहे उतनी मात्रा में मौजूद होती है, जड़ें उसमें से लेती हैं। घने जंगलों में अनगिनत फल देने वाले फल–पेड़, इसी केंचवों के विष्टा पर ही जीते हैं और हर साल अनगिनत फल देते हैं। भूमि पर फसलों को या फल पेड़ों को पानी के साथ जीवामृत दिया और भूमि पर आच्छादन ढक दिया कि केंचवे ये काम अपने आप करते हैं। उसी तरह ऊपर–नीचे आते वक्त भूमि की किसानी भी करते हैं, हल चलाते हैं, भूमि उर्वरा बनाते हैं। कोई भी फसल को या फल पेड़, हमें ऊपर से कुछ भी नहीं देना पड़ता। ये केंचवें भूमि की खेती भी करते हैं, भूमि को लगातार सछिद्र बनाते हैं और पूरी बारिश का पानी भूमि में रिसाव करते हैं।

बारिशकाल समाप्त होते ही भूमि के अन्दर जमा जल की नमी केशाकर्षण शक्ति के द्वारा ऊपर भूमि के सतह पर वाष्पी भवन क्रिया चालू होकर आती है तो अपने साथ भूमि के अन्दर स्थित खनिज क्षार उसके साथ घोलकर ऊपर आते हैं और फसलों के या फल पेड़ों के जड़ों को मिलते हैं। मई या जून महीने में चक्रवात उठते हैं, बिजली चमकती है, और जोर की बारिश होती है, तो उस बारिश की बूँदों में बिजली के प्रभाव से हवा में स्थित नत्र मिल जाता है और नायट्रिक अम्ल के माध्यम से भूमि पर बारिश के साथ आकर भूमि में रिस जाता है। जो नैट्रेट के रूप में जड़ों को उपलब्ध होता है। निसर्ग कृषि में फसलों के बीच या फल पेड़ों के बीच जो घास उगकर बढ़ती है। उसे उखाड़ कर पेड़ों के नीचे ही हम रखते हैं, जो आगे नमी से विघटित होती है और उन घासों में बंदिस्त अन्न तत्व फल पेड़ों के जड़ों को प्राप्त होते हैं।

## वाणी के वरद सपूत भारती-पूत श्री मोदी जी

मोदी की जरूरत है देश के लिये।
भारत के पूरे परिवेश के लिये।।
नेता लौह–पुरुष सा दूसरा नहीं।
वैश्विक नीति के भी वेश के लिये।।
जिन्हें नहीं भारत की शान की फिकर।
जिन्हें नहीं राष्ट्र–स्वाभिमान की फिकर।।
देशद्रोहियों के संग खड़े होते हैं।
*विदेशों में करते विरोध की जिकर।।*
रफाल पै कर रहे बचकाना शोर।
देश की सुरक्षा कर रहे कमजोर।।
सीमाओं की फिकर न सेना की फिकर।
सैन्यशक्ति–ज्ञान का न जिन्हें ओर छोर।।
मुकुट पानें को है ये इतने बेताब।
देश में लगाते गृहयुद्ध जैसी आग।।
देश आंखमिचौली का खेल नहीं है।
दिन में भी तारों का ये देखते हैं ख्वाब।।
खेतों में खड़े हुए किसान के लिए।
सीमा पे खड़े हुए जवान के लिए।।
कमल है देश की समृद्धि का प्रतीक।
नारियों के पूर्ण स्वाभिमान के लिए।।
देश जिसको सशक्त नेता मानता।
भारत का शौर्य स्वाभिमान जानता।।
कमल सी विमल है सारव मोदी की।
हर देशवासी इसे पहचानता।।

**लक्ष्मी प्रसाद गुप्त**

# विश्वभर में भारतीय दर्शन के महान् प्रतिष्ठापक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् पर आरोपित ये कैसे काले धब्बे!!

✍ आचार्य प्रणव

**भारत** के द्वितीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् की आर्ष मेधा, अपार विद्वत्ता, गहन तर्कनिष्ठ विवेचन–शैली, अद्भुत व्याख्यान–कौशल और निर्विवाद प्रशासनिक दक्षता के विषय में जनमानस में कभी कोई सन्देह नहीं रहा। उन्होंने एक सामान्य शिक्षक के रूप में जीवन प्रारम्भ किया था; लेकिन अपने विशिष्ट अध्यवसाय, गुण–गरिमा और प्रखर प्रतिभा के बल पर वे भारत गणराज्य के सर्वोच्च पद तक पहुँच गये। पूर्व के तत्त्वज्ञान को उन्होंने पश्चिमी जगत में उसी मुहावरे और भाषा में पहुँचाया और समझाया, जो पाश्चात्य विद्वानों की जानी–पहचानी थी। वे विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति रहे, रूस जैसे बड़े देश में राजदूत रहे, उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति जैसे पदों को उन्होंने सुशोभित किया, लेकिन वे सदैव अपने को शिक्षक ही मानते रहे। इसीलिए प्रतिवर्ष सम्पूर्ण भारत भर में ५ सितम्बर को उनका जन्मदिन शिक्षक–दिवस के रूप में आदर से मनाया जाता है। विज्ञान और अध्यात्मक, पूर्व और पश्चिम तथा पुरातन और अद्यतन के समन्वय के लिए आजीवन सचेष्ट स्व. डॉ. राधाकृष्णन का जीवन आलोक की वह समुज्ज्वल दीपशिखा है, जिसमें भारत आज भी अपनी यथार्थ पहचान का सन्धान कर सकता है।

लेकिन ऐसे गौरवमय व्यक्तित्व की महानता पर भी यदि कोई संशय के काले धब्बे लगाने की कुचेष्टा करे, तो वह निन्दनीय ही कहा जाएगा और यह कार्य जब स्वयं उस महाप्रज्ञ का पुत्र करे, तो और भी चिन्त्य है। बहुत दिनों से मैं डॉ. राधाकृष्णन् की किसी अच्छी और प्रामाणिक जीवनी की खोज में था।। इसीलिए जब उनके पुत्र सर्वपल्ली गोपाल के द्वारा लिखित पुस्तक 'राधाकृष्णन् : ए बायोग्राफी' मिली, तो मेरी प्रसन्नता स्वाभाविक थी। डॉ. एस. गोपाल जे.एन.यू.में इतिहास के एमेरिटस प्रोफेसर रहे हैं। सोचा था, बेटे ने अपने सुविख्यात पिता की प्रामाणिक जीवन–कथा संजोने में निश्चित ही बड़ा परिश्रम किया होगा, लेकिन इसे पढ़ने पर बेहद निराशा हाथ लगी। इस किताब ने भी उसी तरह मेरी आस्था पर मार्क्सवादी हथौड़े का अन्धा प्रहार किया, जिस तरह डॉ. एस. गोपाल की इतिहास पर लिखी दूसरी किताबों ने निराश किया था। अच्छी–से–अच्छी चीज भी किसी मार्क्सवादी तथाकथित इतिहासकार के हाथों में पड़कर किस तरह 'विनायक' से 'वानर' बन जाती है, उसकी जीवन्त मिसाल डॉ. राधाकृष्णन् की यह जीवनी है। इस कलियुगी पुत्र ने अपने महान पिता की जन्मतिथि, पितृत्व, चरित्र और प्रतिभा, जिस पर भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व निश्छल श्रद्धा रखता रहा है, सबको संदिग्ध घोषित कर दिया है। डॉ. राधाकृष्णन् की जन्म–तिथि ५ सितम्बर को 'सरकारी स्तर पर प्रचलित' बताकर डॉ. एस. गोपाल ने यह नई जानकारी दी है (–जिससे स्वयं स्व. डॉ. राधाकृष्णन् भी अपरिचित थे; क्योंकि ५ सितम्बर के प्रतिवार्षिक आयोजन उनकी सहमति से ही प्रारम्भ हुए थे) कि उनका जन्म वास्तव में २० सितम्बर, १८८७ को मद्रास के उत्तर–पश्चिम में स्थित उस छोटे से नगर तिरुतानी में हुआ था, जिसकी पहचान मन्दिरों के कारण रही है। उनके माता–पिता थे निर्धन ब्राह्मण–दम्पति वीरस्वामी और सीतम्मा। लेकिन जीवनीकार ने उनके असली पितृत्व के विषय में भी सर्वथा एक नई 'गवेषणा' प्रस्तुत की है। तदनुसार डॉ. राधाकृष्णन् क वास्तविक पिता वीरस्वामी नहीं थे–उनका वास्तविक जनक था कोई स्थानीय प्रशासन में कार्यरत वरिष्ठ अधिकारी, जिसके पास राधाकृष्णन् के मामा ने अपनी बहन सीतम्मा को जान–बूझकर सहवास हेतु इसलिए भेजा था, ताकि उस अधिकारी की कृपा उसे प्राप्त हो सके। अपनी इस 'मौलिक' खोज की पुष्टि के लिए डॉ. एस. गोपाल ने जो तर्क दिया है, वह यह है कि इसी कारण

जो अपनी चतुराई से किसी तरह छात्रवृत्तियों को पाने में सफल हो जाते थे। डॉ. गोपाल के अनुसार उस समय वे न तो पढ़ाकू थे और न खेल–कूद में ही रुचि लेने वाले छात्र थे। उनका मुख्य काम था गाँव–गाँव में निरर्थक मारे–मारे फिरना तथा कामचोरी और आवारगी में ही सारा समय बिता देना।

अपने स्वर्गीय पिता के चरित्र से भी डॉ. गोपाल को बहुत शिकायत दिखती है। उनके अनुसार डॉ. राधाकृष्णन् ने बहुत प्रारम्भिक जीवन में ही अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया था। अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध बनाने के कारण, इस जीवनीकार के अनुसार, डॉ. राधाकृष्णन् अपनी पत्नी के प्रति कभी निष्ठावान नहीं रहे।

इसके बाद डॉ. राधाकृष्णन् की 'दर्शन–प्रियता' पर से उनके जीवनीकार बेटे ने पर्दा उठाया है। तदनुसार बी.ए. में पढ़ते समय दर्शनशास्त्र का विषय उन्होंने उसमें रुचि के कारण नहीं, बल्कि मजबूरी में लिया था; क्योंकि इस विषय की पाठ्यपुस्तकें उन्हें अपने रिश्ते के एक भाई से, बिना अधिक व्यय किए ही प्राप्त हो गई थीं। यद्यपि इस विषय में उनकी कोई रुचि नहीं थी।

डॉ. गोपाल की इस पुस्तक में, इस प्रकार ऐसी बहुत–सी बातें हैं, जिनसे स्व. डॉ. राधाकृष्णन् जैसी विराट विभूति के गौरव पर गहरा आघात होता है–वह भी तब, जब आज व डॉ. राधाकृष्णन् शारीरिक सौष्ठव और बौद्धिक प्रतिभा की दृष्टि से अपने अन्य सभी भाई–बहनों से अलग दिखते थे। दूसरी युक्ति के रूप में, इस सन्दर्भ में, गाँव में प्रचलित एक अफवाह का उल्लेख किया गया है। अब इससे यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि मार्क्सवादी इतिहासकारों के इतिहास–बोध का मूलाधार अफवाहें ही होती हैं। स्वयं स्व. डॉ. राधाकृष्णन् की अपनी जननी के विषय में क्या धारणा थी, यह तो जानने का आज हमारे पास कोई साधन नहीं है (क्योंकि मार्क्सवादियों के अतिरिक्त अन्य लोग अफवाहों को प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं); लेकिन डॉ. गोपाल ने अपनी दादी की 'बदचलनी' का वर्णन बड़ा रस लेकर किया है–भले ही दूसरे पाठकों के मन में उनका यह 'विकृति रस' बेहद जुगुप्सा उत्पन्न करता हो!

इसके बाद डॉ. गोपाल ने जमकर हमला किया है डॉ. राधाकृष्णन् की बौद्धिक प्रतिभा पर। यह जीवनीकार निःसंकोच घोषित कर रहा है कि उसके पास अपने पिता की, बचपन में, बुद्धिमत्ता का तो कोई प्रमाण नहीं है; लेकिन यह लिखने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं कि डॉ. राधाकृष्णन् अपने बाल्यकाल में प्रबुद्ध विद्यार्थी कतई नहीं थे–हाँ, वे चालाक जरूर थे, स्वयं इन सन्देहों का निराकरण करने के लिए उपस्थित नहीं हैं। यों तो हर परम्परा में मृतक व्यक्ति के सन्दर्भ में संदिग्ध और क्षुद्रतापूर्ण बात कहने की मनाही है; लेकिन मार्क्सवादी मानसिकता शायद इन उदात्त मूल्यों को भी समझने के लिए तत्पर नहीं है। बहुत अच्छा होता, यदि डॉ. गोपाल इस किस्म की अफवाहों को किनारे ही कर देते और अपने स्वर्गीय पिता की, जो आज उनकी ही नहीं, विश्व भर की स्मृतिशेष विशिष्ट धरोहर हैं, भारतीय परंपरा का अनुगमन करते हुए, वास्तविक श्रद्धांजलि समर्पित करते! लेकिन ऐसा करना उनकी दृष्टि में शायद बोर्जुआपन होता–इसलिए सम्भवतः उन्होंने उन्हें निर्मल जल से नहीं, कीचड़ उछालकर श्रद्धा की अंजलि दी है। उपर्युक्त घटिया बातों के अतिरिक्त डॉ. गोपाल ने अपनी इस जीवनी में डॉ. राधाकृष्णन् के सम्बन्ध में कुछ ऐसी जानकारियाँ भी संजोयी हैं, जो जीवनीकार के लिए भले ही प्रतिगामी प्रतीत होती हों; लेकिन अन्य पाठकों के लिए निश्चित ही नई, अब तक अचर्चित और अत्यन्त मूल्यवान हैं। अभारतीय मानसिकता वाली पिछली भारतीय सरकारों के कार्यकाल में शायद इन तथ्यों को उजागर करना उनके लिए घाटे का सौदा ही सिद्ध होता। इसी पुस्तक से ज्ञात होता है कि डॉ. राधाकृष्णन् को अपनी किशोरावस्था में स्वामी विवेकानन्द के द्वारा लिखित उन पत्रों से बड़ी प्रेरणा मिली थी, जिनमें उन्होंने भारतीय युवकों को राष्ट्रीय गौरव के संवर्द्धन–हेतु प्रेरित किया है। महान क्रान्तिकारी वीर सावरकर के द्वारा प्रणीत 'भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम' शीर्षक ग्रन्थ ने भी उनके मन पर बहुत

शेष पृष्ठ 10 पर

# आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य सत्य ज्ञान वेद का प्रचार कर अज्ञान को दूर करना

✍ मनमोहन कुमार आर्य

**आर्यसमाज** एक धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, देश–समाज का रक्षक, अंधविश्वासों से मुक्त तथा अंधविश्वासों व सामाजिक कुरीतियों को दूर करने वाला विश्व के इतिहास में अपूर्व संगठन है। विचार करने पर निष्कर्ष निकलता है कि आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करना है। विद्या किसे कहते हैं और इसका स्रोत क्या है। इसका उत्तर है विद्या यथार्थ ज्ञान को कहते हैं। सत्य ज्ञान विद्या की कोटि में आता है। जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही मानना व प्रतिपादित करना सत्य कहलाता है और वह सत्य ज्ञान ही विद्या है। इसके विपरीत जो ज्ञान सत्य की कसौटी पर खरा न हो वह अविद्या कहलाता है। विद्या वा सत्य ज्ञान का स्रोत वेद है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और इसमें जो कुछ कहा या बताया गया है वह सब सृष्टि के रचयिता ईश्वर द्वारा आदि ऋषियों को दिया गया ज्ञान है। ईश्वर ने उन आदि सृष्टि के चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान उसे समस्त मनुष्यों तक प्रचारित करने के लिए दिया था। वेद विद्या के ग्रन्थ हैं और अविद्या से मुक्त हैं। वेद के अनुकूल ज्ञान को विद्या कहते हैं और जो कुछ वेदविरुद्ध है वह अविद्या कहा जाता है। जो मनुष्य विद्या से युक्त होकर उसके अनुकूल आचरण करता है वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है।

आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य वेद विद्या को जन–जन में प्रचारित करने का है जिससे वह अज्ञान से मुक्त होकर अपने सभी कर्म *वेदानुकूल करके धर्म, अर्थ, काम* व मोक्ष के अधिकारी बन सकें। यदि वह वेदानुकूल आचरण सहित वैदिक विधि से ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, पितृयज्ञ आदि नहीं करते तो वह धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष से वंचित रह जाएँगे। परमात्मा ने मनुष्य को आँखें देखने के लिए, कान सुनने के लिए, नाक सूंघने के लिए, त्वचा स्पर्श की अनुभूति कराने के लिए, मुँह बोलने तथा जिह्वा भक्ष्य पदार्थों का रस जानने व उसका भोग करने के लिए प्रदान की है। इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्य को अन्तःकरण चतुष्टय जिसमें मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार है, प्रदान किए हैं। बुद्धि को भाषा व सांसारिक ज्ञान विज्ञान तक सीमित नहीं रखना चाहिए अपितु इससे वेदादि साहित्य का स्वाध्याय करके ईश्वर, जीवात्मा तथा कारण व कार्य प्रकृति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके ईश्वरोपासना करके सृष्टि के भक्ष्य व सुख के पदार्थों का त्यागपूर्वक भोग करना चाहिए। लोभ की प्रवृत्ति, अधिक धन संग्रह व अपना सारा समय धन प्राप्ति में ही व्यय करना वित्तैषणा रूपी रोग का लक्षण है। महात्मा चाणक्य ने कहा है कि धन की तीन गति होती है प्रथम भोग, दूसरा दान तथा तीसरा नाश। यदि आपका ध न त्यागपूर्वक भोग करने के बाद भी बच जाता है तो उसका दान कर देना चाहिए अन्यथा यह नाश का कारण होगा व हो सकता है।

विद्या प्राप्त मनुष्य ईश्वर व आत्मा के सत्यस्वरूप को जानकर ईश्वरोपासना से अपनी आत्मा के दोषों का निवारण करता है। ईश्वर की उपासना से मनुष्य की आत्मा के दोषों का निवारण होकर उसकी अपवित्रता दूर होकर पवित्रता प्राप्त होती है। ईश्वर का साक्षात्कार होने पर संसार का सबसे बड़ा सुख ईश्वर का आनन्द मिलता है और इसके बाद वह मोक्ष को प्राप्त होकर ३१ नील से अधिक वर्षों तक मोक्ष का सुख अर्थात् आनन्द को भोगता है। दूसरी ओर वेदज्ञान विहीन लोग अविद्या से ग्रस्त होकर अज्ञान, अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष आदि का सेवन करके अपनी आत्मा को अधोगति की ओर ले जाकर दुःख, पीड़ा, कष्ट आदि को प्राप्त होते हैं। अंग्रेजी की कहावत है कि 'इग्नौरेंस इज द कौज ऑफ मिस्टरी' अर्थात् अज्ञान ही दुःखों का कारण है यह वैदिक नियम का ही अनुवाद प्रतीत होता है। सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक भारत में सहस्रों वेदज्ञानी ऋषि–मुनि होते थे। तब आर्यसमाज जैसे किसी संगठन की आवश्यकता नहीं थी। महाभारत के युद्ध में सभी व अधिकांश ऋषि एवं विद्वान नष्ट हो जाने के कारण अज्ञान, अन्धविश्वासों, कुरीतियाँ, मिथ्याचार, अन्याय, शोषण, अमानवीयता आदि में वृद्धि होने पर एक ऐसे संगठन की आवश्यकता अनुभव हुई जो इन बुराइयों को दूर कर सके। महाभारत के बाद ईसा के सन् १८६३ तक देश अज्ञान, अन्ध विश्वास व सत्यासत्य के ज्ञान से विमुख व बहुत दूर जा चुका था। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने संसार की सभी बुराइयों को दूर करने का उपाय सोचा। अपने गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी की शिक्षा एवं प्रेरणा से उन्होंने सभी दुःखों का कारण अविद्या को जानकर इसके उन्मूलन में कार्य करने का निर्णय लिया।

गुरु–शिष्य के परस्पर संवाद एवं निश्चय का परिणाम ही भविष्य में आर्यसमाज की स्थापना व इसके द्वारा वेदादि सत्साहित्य का प्रचार व प्रसार निश्चित हुआ। महर्षि दयानन्द ने सन् १८६३ ईसवी से आर्यसमाज की स्थापना दिवस १०–४–१८७५ तक देश भर में घूम–घूम कर अज्ञान व अन्ध विश्वासों सहित कुरीतियों एवं मिथ्या परम्पराओं का खण्डन किया और आर्यसमाज की स्थापना के बाद ३०–१०–१८८३ को मृत्यु होने के दिवस तक उनका अज्ञान व अन्धविश्वासों के खण्डन तथा विद्या के प्रचार–प्रसार का कार्य, जिसे वेद प्रचार कहा जाता है, जारी रखा। महर्षि दयानन्द ने अविद्या दूर करने के लिए अनेक कार्य किए। इसके लिए उन्होंने देश के अनेक भागों में जाकर उपदेश, प्रवचन तथा व्याख्यान द्वारा मौखिक प्रचार किया। लोगों की शंकाओं का समाधान किया। विपक्षी व विरोधियों से शास्त्रार्थ कर उनकी मिथ्या मान्यताओं का निर्मूलन किया। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, यजुर्वेद–ऋग्वेद (आंशिक) भाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि अनेकानेक

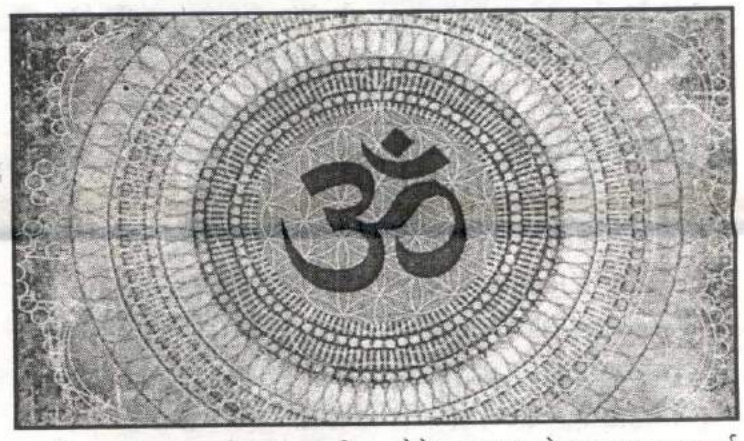


ग्रन्थों का प्रणयन किया। सभी मत–मतान्तरों के आचार्यों को आमंत्रित कर एक सत्यमत वैदिक मत को स्थापित करने का प्रयत्न किया। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जन्मना–जातिवाद, बाल विवाह, बेमेल विवाह, छुआछूत, ऊँच–नीच, शिक्षा व अध्ययन–अध्यापन में पक्षपात को वेद विरुद्ध, ज्ञान विरुद्ध, न्याय विरुद्ध सहित तर्क व युक्ति विरुद्ध सिद्ध किया। महर्षि दयानन्द जी के बाद उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज और उसके प्रमुख विद्वानों स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, पं. गणपति शर्मा, पं. कालूराम जी, स्वामी वेदानन्द तीर्थ, पं. शिवशंकर शर्मा, पं. बुद्धदेव मीरपुरी, पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार जी आदि ने भी उनके कार्य को बढ़ाया। ऋषि दयानन्द जी व उनके अनुयायियों के कार्यों से जन्मना जातिवाद व ऊँच–नीच समाप्त हुई व कम हुई। स्त्री–शूद्र सहित सभी मनुष्यों को वेद और विद्या ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त हुआ। बाल विवाह, सती प्रथा, बेमेल विवाह बन्द हुए तथा गुण–कर्म–स्वभाव पर आधारित विवाह होने आरम्भ हुए और अब भी इनका प्रभाव निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हो रहा है। देश आजाद हुआ। इसमें भी सबसे अधिक वैचारिक योगदान ऋषि दयानन्द जी का है तथा उनके अनुयायियों ने क्रांतिकारी व अहिंसात्मक आन्दोलन में बढ़–चढ़कर योगदान किया है। कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी भूमिका अन्यों से कम रही परन्तु उन्हें सत्ता का सुख भोगने के अधिक अवसर मिले। आर्यसमाज सत्ता से दूर रहा है इसलिए राजनीति व राजनीतिक दलों में अज्ञान व भ्रष्टाचार आदि में वृद्धि हुई है।

आर्यसमाज का अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि का जो आन्दोलन है वह कभी समाप्त न होने वाला आन्दोलन व प्रचार कार्य है। आर्यसमाज के द्वारा वैदिक सत्साहित्य की रचना व प्रचार से ईश्वर व जीवात्मा सहित मूल प्रकृति का सत्य स्वरूप पूरे विश्व के सम्मुख लाया गया है। अधिकांश लोग अपने स्वार्थों के कारण सत्य को स्वीकार नहीं कर रहे हैं और परिणामतः अपना ही अहित कर रहे हैं। जब उन्हें सद्ज्ञान प्राप्त होगा तो वह निश्चय ही आर्यसमाज की विचारधारा को अपनाकर अपना व अन्यों का कल्याण करने के मार्ग पर आयेंगे। सत्य का प्रचार ईश्वर का कार्य है। जो व्यक्ति असत्य में लिप्त व संलग्न है, वह ईश्वर की अवज्ञा कर रहा है। असत्य को छोड़े बिना व्यक्ति, परिवार व समाज की उन्नति नहीं हो सकती। आर्यसमाज और इसकी विचार धारा ही एकमात्र ऐसी विचार धारा है जो पूर्ण सत्य पर आधारित है और इसके अधिकांश अनुयायी सत्य का पालन करते हैं। आर्यसमाज का अज्ञान निवृत्ति का आन्दोलन अभी आरम्भ अवस्था में है। भविष्य में जितने लोग इसे अपनाते जाएँगे यह सफल होता जाएगा। सत्य पर आधारित होने के कारण हमें पूर्ण निश्चय है कि वेद और वैदिक धर्म ही भविष्य के विश्व के धर्म व मत होंगे। हमें अपनी ओर से जितना सम्भव हो वेद अर्थात् सत्य विद्याओं का प्रचार करना है। परिणाम ईश्वर के हाथों में है और वह हमेशा सत्य के पक्ष में ही होता है।

# महाराणा प्रताप जयन्ती ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया (सं. १५६७ वि. सन् १५४०)

## इस वर्ष ०६ जून २०१६ के पावन अवसर पर महाराणा प्रताप की चट्टान और अकबर का तूफान

✍ इन्द्र विद्यावाचस्पति

तूफान और चट्टान में से कौन बड़ा है? तूफान मकानों को गिरा देता है, वृक्षों को उखाड़ देता है, स्थल को जलमय बना देता है और पशु–पक्षियों को बे–घरबार कर देता है। उस समय उसके प्रवाह को रोकना असंभव हो जाता है। वह पानी में तेल की तरह आकाश में फैल जाता है, उसकी गति आगे ही आगे चलती है, यहाँ तक कि सैकड़ों कोसों तक हाहाकार मच जाता है। आकाश और पृथ्वी जलमय दिखाई देने लगते हैं। चट्टान अपने स्थान में खड़ी रहती है। वह न हिलती है न डोलती है। वह न फैलती है और न आगे बढ़ती है। तूफान आया–आज नहीं आज से सदियों पहले भी तूफान आया–थोड़ी देर के लिए चट्टान को ढक लिया, उस पर चोटें कीं, उससे कुश्ती की, दो–चार वृक्ष गिरा दिये, दो–चार शिलाय लुढ़का दीं–सिर पीटा, हाथ–पाँव मारे और थककर आगे चला गया। सैकड़ों तूफान आये और चले गये, पर चट्टान अपने स्थान पर खड़ी है।

कहिए तूफान बड़ा है या चट्टान? तूफान संसार की गति का उदाहरण है तो चट्टान स्थिति का। तूफान एक क्षण का सूचक है, तो चट्टान सदियों का। तूफान एक मन का उबाल है, परन्तु चट्टान मनुष्य की स्थिर प्रकृति है। दोनों में बड़ा कौन है, और छोटा कौन, इसका उत्तर देना कठिन है।

### अकबर तूफान था, तो प्रताप चट्टान

वह तूफान जब उमड़ा तो बड़े–बड़े महलों और अटारियों के सिर झुक गये। उसकी सेनायें पानी की बौछार की तरह आकाश में फैल गईं। उसकी वीरता ने नदी की भाँति उमड़कर जंगलों को बहा दिया और ग्रामों को बरबाद कर दिया। उसकी प्रतिभा बिजली की तरह कड़ककर जिस पर पड़ी उस चकनाचूर कर दिया। केवल वही बचे रहे, जिन्होंने तूफान को देखकर सिर झुका लिया और साष्टांग प्रणाम करके अधीनता स्वीकार कर ली या बची रही वह चट्टान जिस पर तूफान ने ठोकर पर ठोकर मारी, बिजली फेंकी और गरज कर डराया, पर एक न चली। अन्त में तूफान उड़ गया, आकाश साफ हो गया, न वह गर्जन रहा और न वह चमक, पर वह चट्टान वहाँ सिर उठाये खड़ी रह गई। अकबर की प्रतिभा और उसकी सैन्य शक्ति ने तूफान की तरह भारत को आच्छादित कर लिया–देश के शासक रूपी वृक्ष या तो झुक गये, या उखड़ गये, एक राणा प्रताप था जो न झुका और न उखड़ा। वह अपने मान पर और अपनी आन पर डटा रहा। तूफान उड़ गया, अकबर और अकबर के वंशज आये, और चले गये। आज उनके कई वंशज दिल्ली के कूचों में दर–दर के भिखारी बने फिरते हैं, परंतु राणा प्रताप की संतान अब भी गद्दी पर विराजमान है।

### विश्व में अद्वितीय है महाराणा प्रताप की बहादुरी

राजपूताने के इतिहास–लेखक कर्नल टाड ने अकबर और प्रताप के संघर्ष के संबंध में लिखा है कि अदम्य साहस, अटूट धैर्य, मान की रक्षा का भाव, सहिष्णुता और स्वाभिमान जिसकी समानता विश्व में कहीं नहीं है, बढ़ी हुई महत्त्वाकांक्षा, चमकदार गुण, अनन्त साधना और मजहबी जोश के साथ टक्कर खा रहे थे, परन्तु उनमें से कोई भी उस अजेय आत्मा (प्रताप) का सामना नहीं कर सकता था। 'अकबर का इतिहास'–लेखक विंसैण्ट स्मिथ ने लिखा है कि जिन चमकदार गुणों या अनन्त साधनों की सहायता से अकबर अपनी बढ़ी हुई महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण कर सका, उनमें लोग ऐसे चौंधिया जाते हैं कि उन बहादुर शत्रुआ के लिए उनके पास सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं रहता, जिनकी बरबादी पर अकबर का महल खड़ा हुआ था। वह पुरुष

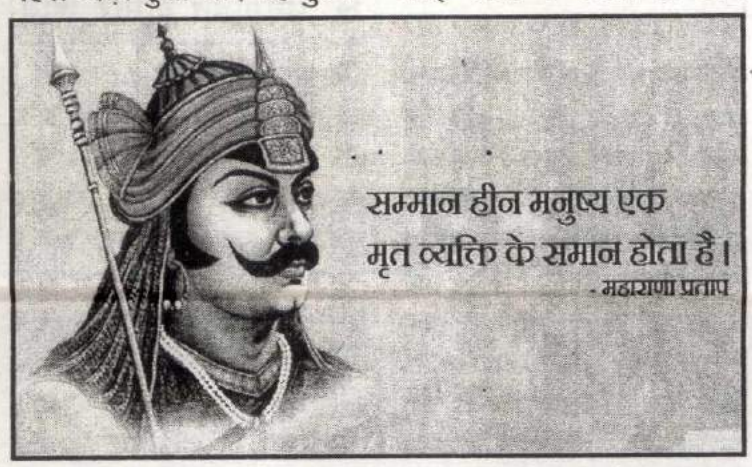


और स्त्रियाँ भी स्मरण के योग्य हैं। संभवतः वह पराजित स्त्री–पुरुष विजेता की अपेक्षा अधिक महान थे।

### प्रताप का राज्यारोहण (१५७२ ई.)

उदयसिंह की मृत्यु पर १५७२ ई. में प्रताप सिंह गद्दी पर बैठे। उस समय मेवाड़ का राज्य हर तरफ से खोखला हो रहा था। खजाने में पैसे का, सेना में सिपाहियों का और हृदयों में उत्साह का अभाव था। चित्तौड़ के अनमोल वीरों के हृदय निराशा के पाले से कुम्हला चुके थे। प्रताप ने सिंहासनारूढ़ होकर चारों ओर दृष्टि उठाई तो उसे बप्पा रावल की कीर्ति के खण्डहर मात्र दिखाई दिये। वीर का हृदय उस विनाश को देखकर मुरझाया नहीं, प्रत्युत उसने दृढ़ संकल्प किया कि वह अपनी माँ के दूध की लाज रखेगा और चित्तौड़ की गगनचुम्बिनी चोटी पर राजपूत ध्वज को फिर से फहरा कर दम लेगा। कार्य बड़ा भारी था एक ओर अकबर जैसा शक्तिशाली सम्राट, जिसके बढ़ते हुए छत्र के सामने वीर राजा भी सिर झुका रहे थे, अनगिनत सिपाही जो मुगल बादशाह की आवाज पर उमड़ पड़ते थे, दूसरी ओर राजधानी से विहीन राज्य, उजड़ते क्षेत्र, खाली खजाना और मुट्ठी भर सिपाही। ऐसी दशा में वही वीर लड़ने की ठान सकता था, जिसकी आत्मा प्रबल हो, जो भय किस चिड़िया का नाम है, यह न जानता हो, जिसके लिए सांसारिक विघ्न कोई सत्ता न रखते हों और जिसका धैर्य अटूट हो। भाग्यवश महाराणा प्रताप (राणा सांगा के नाती में वह गुण विद्यमान थे।) प्रताप ने माँ के दूध की शपथ खाकर प्रण किया कि वह मेवाड़ को स्वाधीन करायेगा और सिसोदिया वंश की लाज रखेगा। वीर की ओर वीर खिंचते हैं। बहादुर सेनापति को पाकर गुफाओं में सोये हुए राजपूत शेर भी जाग उठे और मेवाड़पति के झंडे के नीचे इकट्ठा होने लगे।

### युद्ध में जाने से पूर्व महाराणा प्रताप द्वारा सेना को सम्बोधित करना : बप्पा रावल के वंश के रुधिर की पवित्रता का संकल्प

परीक्षा का समय शीघ्र आ गया। उस समय अकबर राजपूत कन्याओं से विवाह करके राज्य की नींव को सांमाजिक सम्बन्धों के वज्रलेप समान मसाले से भर रहा था। जब महाराणा के सामने यह प्रस्ताव रखा गया कि वह भी अपनी लड़की का डोला मुगलों के हरम में भेज दें, तो उसने प्रस्ताव को अपमानजनक समझा और घोषणा कर दी कि बप्पा रावल के वंश का रुधिर पवित्र रहेगा। इस एक घोषणा द्वारा मेवाड़पति ने अपने आपको मुगल–सम्राट का विरोधी बना लिया।

प्रताप का पहला कार्य राज्य की सुव्यवस्था करना था। उस समय कुम्भलमेर का किला राजधानी का कार्य कर रहा था। राणा ने उसे सुरक्षित करने के लिए कई प्रकार के प्रत्यन किए। अन्य दुर्गों का भी पुनः संस्कार किया गया। राज्य के कारखानों को यथासंभव मांजा गया। मेवाड़ के जो प्रान्त राणा के हाथ से निकंल चुके थे, उन्हें शत्रु के लिए भी निकम्मा बना देने की चेष्टा की गई। इस चेष्टा में प्रताप को बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई। यह आज्ञा प्रचारित की गई कि चित्तौड़ के नीचे के मैदानों में किसान खेती न करें, कोई ग्वाला जानवरों को न चराये और कोई गृहस्थ दिया न जलाये। इस प्रदेश को बिल्कुल उजाड़ कर दिया गया जिससे वहाँ शत्रु पैर न जमा सके। इस प्रबंध से राणा ने अपने शत्रुओं को पास आने से रोका।

### राजा मानसिंह की नासमझी

परन्तु बहुत देर तक यह पैतरेंबाजी जारी न रह सकी। राजा मानसिंह की नासमझी ने संघर्ष का अवसर शीघ्र ही उपस्थित कर दिया। राजा मानसिंह अकबर के लिए शोलापुर को जीतकर दिल्ली को वापस आते हुए कुम्भलमेर के किले में राणा प्रताप से मिलने के लिए ठहरा। राणा ने स्वेच्छा से आये हुए मेहमान का विधिवत् सत्कार किया, परन्तु भोजन के समय उपस्थित न होकर राजकुमार को भेज दिया। राजा मानसिंह ने थोड़ी देर तो प्रतीक्षा की, जब देखा कि विलम्ब अधिक होता जा रहा है तो कुमार से पूछा। कुमार ने उत्तर दिया कि राणा का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। राजा मानसिंह ताड़ गये कि राणा ऐसे आदमी के साथ भोजन नहीं करना चाहते, जिसके परिवार ने मुसलमानों के घर में डोला भेजकर राजपूती शान पर बट्टा लगाय होगा। वह लज्जित होने के स्थान पर क्रोधित हो शेष पृष्ठ 10 पर

# गीता का निष्काम कर्म और वेद

✍ रामकिशोर वाजपेयी

**श्रीमद्भगवद्गीता** का केन्द्रीय विषय निष्काम कर्म एक सटीक साधन है। गीता में भगवान ने तो यहाँ तक कह दिया है कि योग कामना की पूर्ति और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए जो कामात्मा पुरुष वेदों में सृष्टि के लिए प्रतिपादित सकाम कर्मों का अनुष्ठान अपने हित साधन के लिए करते हैं, वे मूढ़ हैं, क्योंकि सकाम कर्मों का अनुष्ठान भोग और ऐश्वर्य तो दे सकता है लेकिन करने वाले को संसार–चक्र से बाँधे रखता है। सकाम कर्मों के कारण बुद्धि निश्चयात्मक नहीं हो पाती और ऐसे कर्मों के पुण्य से जो स्वर्गादि दिव्य भोग और ऐश्वर्य मिलते हैं, वे पुण्य के क्षय होने पर जन्म–मरण का पुनः कारण बनते हैं।

गीता में भगवान की घोषणा है कि न तो वेद के अध्ययन से अथवा यज्ञों के सम्पादन से, न दान से, न यौगिक क्रियाओं से और न उग्र तपों से ही मेरा दर्शन हो सकता है, क्योंकि ये सब मन, इन्द्रिय और शरीर की क्रिया द्वारा ही सम्पन्न किए जाते हैं। समाधान परक होकर भगवान ने इस सन्दर्भ में यह भी कहा है कि जो पुरुष तात्त्विक रूप से जानकर वेदों में बतलाये गये अनुष्ठानों को करेगा, वही हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित मुझ परमात्मा को जान सकेगा। अतः हे अर्जुन! तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों की शरण लेकर तत्त्व–ज्ञान का उपदेश प्राप्त कर। महाभारत (शान्तिपर्व ३१८/५०) में महर्षि याज्ञवल्क्य ने राजा विश्वासु से गीताकार के समान ही कहा है–

**साङ्गोपाङ्गानि यदि यश्च वेदानधीयते।**
**वेदवें न जानीते वेदभारवहो हि सः।।**

अर्थात् साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़कर भी जो वेदों द्वारा जानने योग्य परमात्मा को नहीं जानता, वह मूढ़ केवल वेदों का बोझ ढोने वाला है। वेदों के प्रति ऐसे ही भाव प्रकट करने वाले गीता के निम्नलिखित वचन भी विचारणीय हैं–

**यामिमां पुष्पितां वाचम्।**
**(गीता २/४२)**
**वेदवादरताः (गीता २/४२)**
**कामात्मानः स्वर्गपरा**
**जन्मकर्मफलप्रदाम्।**
**क्रियाविशेषबहुलां**
**भोगैश्वर्यगतिं प्रति।।**
**(गीता-२/४३)**
**त्रैगुण्यविषया वेदाः (गीता २/४५)**
**जिज्ञासुरपि योगस्य**
**शब्दब्रह्मातिवर्तते। (६/४४)**
**एवं त्रयीधर्म**
**मनुप्रपन्नागतागतं कामकामा**
**लभन्ते। (गीता ६/२१)**
**नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन**
**न चेज्यया।**
**शक्य एवंविधो द्रष्टुं**
**दृष्टवानसि मां यथा।।**
**(गीता ११/५३)**

गीता के उपर्युक्त वचनों को कुछ विद्वान वेदों की निन्दा कर रहे प्रतीत होते हैं। ये वचन वेदों की निन्दा नहीं है बल्कि उन कामात्मा पुरुषों को सावधान करने के लिए कह गये हैं, जिन्होंने भोग और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सकाम कर्मों को करना अपना स्वभाव बना लिया है। इन वचनों से भगवान ने वेदों में वर्णित सकाम भाव वाले कर्मकाण्डों के स्थान पर आसक्ति रहित निष्काम कर्मों का पक्ष गीताकार ने लिया अवश्य है लेकिन गीता में विभिन्न स्थलों पर वेदों के लिए प्रशंात्मक अनेक वचन भी मिलते हैं। गीता में भगवान कहते हैं कि जानने योग्य पवित्र ॐकार, ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद मैं ही हूँ। अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए भी भगवान ने स्वीकार किया है कि वेदों में मैं सामवेद हूँ। अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण भगवान ने वेदों से ही दिया है, जब उन्होंने कहा कि अतोऽस्मिलोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः (गीता–१५/१८) अर्थात् वेद में भी मैं पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ। महात्मा गाँधी ने इस गुत्थी को बहुत सुन्दर ढंग से सुलझाया है। वे कहते हैं कि पुरुष का चित्त कुकर्मों के कारण मलिन हो जाता है। चित्त से मलों को हटाने क लिए सत्कर्मरूपी वैदिक कर्मकाण्डों के अनुष्ठान का प्रावधान हमें उपलब्ध कराया गया है। शास्त्रोक्त कर्म चित्त की शुद्धि करके उसे निर्मल और शान्त शेष पृष्ठ 11 पर

# भारत और भारतीयता

कोई भी देश अपनी विशेषताओं के कारण गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। भारत नाम की अपनी विशेषता है। यदि इस देश का व्यक्ति केवल 'भारत' इस नाम के सम्बोधन में विचार करे, तो उसके भीतर गौरव की रेखा का स्फुरण हो सकता है। उसके भीतर सात्विकता का भाव जग सकता है। वह अपने भीतर की दुर्बलता को दूर करने के लिए कटिबद्ध हो सकता है। अपने भीतर की सम्भावना को प्रस्फुटीकरण के लिए उसका मन मचल सकता है। भुजाएँ हिल सकती हैं। बुद्धि में स्पंदन हो सकता है। उनके मस्तिष्क में विचार आ सकते हैं और जीवन तपश्चर्या और साधना के लिए प्रस्फुटित हो सकता है।

भारत नाम का स्मरण करते ही सारी बातें मेरे और आपके भीतर जग सकती हैं, परन्तु बहुत कठिनाई यह है कि संविधान का निर्माण करते समय हम लोग न मालूम किस कारण से 'इण्डिया दैट इज भारत' लिख बैठे। जिन लोगों ने पाश्चात्य सभ्यता में अपने जीवन को व्यतीत किया था, उन सब लोगों के मन में बड़ी झिझक थी और वे सब भारत कों भारत स्वीकार नहीं कर सकते। यदि भारत शब्द का ही बार–बार उच्चारण कर चिन्तन कराया जाता तो लोग उन सभी बुराइयों से बच जाते जिनके कारण विभाजित हुए।

हमने अपने ही समाज के हजारों लोगों को दूर कर दिया था। भारत का अर्थ होता है–ज्ञान में रत। जिन लोगों का जीवन अपने व्यावहारिक कर्मों को करते हुए भी एक लक्ष्य की ओर बढ़ रहा हो और वह ज्ञान प्राप्त करने में संलग्न, ज्ञान की सर्वोच्च भूमिका में विराजमान होकर जीवन की सार्थकता देने का बारम्बार अभ्यास जिस देश के समस्त नागरिकों के बीच में दिखाई पड़ता है–वह देश अपने को 'भारत' कहा करता था। लेकिन एक हजार वर्ष की परतन्त्रता में जीने के कारण हम लोग उसका अर्थ ही भूल गए। मनुष्य को बार–बार जैसा स्मरण कराया जाये, वैसा ही बन जाता है।

अपने ही एक समुदाय को पशु–तुल्य जीवन जीने के लिए बाध्य किया है क्योंकि मध्ययुग के शास्त्रकारों ने कहा कि तुम वहाँ नहीं जा सकते हो, तुम यह नहीं कर सकते हो, उसके ऊपर ऐसा बार–बार आघात हुआ कि उस समुदाय ने सोचा कि हम शायद इसीलिए निर्मित हुए होंगे और भारत शब्द के भीतर जो गौरव भरा था, उसका स्मरण हम सब लोगों को नहीं करा पाये।

हमारे सिद्धान्त तो बहुत ऊँचे रहे। ईश्वर को हमने सर्वशक्तिमान माना। ऐसी सारी स्थिति में भारत के पश्चिमी छोर पर सोमनाथ में जब कोई आक्रान्ता आया तब हमने उस इतिहास का करुण पृष्ठ पढ़ा जिसमें हमारे देवाधिदेव को भग्न करने की बात लिखी थी। सोमनाथ का शिवलिंग चूर–चूर कर दिया गया। उस मन्दिर की अपार सम्पत्तियों को ऊँटों पर लादकर ले गए। अंदाजा लगा सकते हैं कितने भंडार भरे होंगे? उस समय के भारत की कल्पना करें कि केवल ज्ञान से ही नहीं, अपितु लौकिक सम्पदा से भी परिपूर्ण था भारत। जब कभी मानव विवेक साथ रखकर समृद्धि के शिखर पर पहुँचता है, तो समृद्धि को भोगते–भोगते विवेक को जाग्रत रखने वाला समाज–वैराग्य को निश्चित रूप से अधिकृत करता है। वह कौन–सा काल आ गया कि उपनिषदों का ज्ञान धूमिल होता चला गया। यह सचमुच शोध का विषय है कि यह दुर्बलता मानव के भीतर कैसे आई? एक की छाया पड़े और आदमी को स्नान करना पड़े, ऐसा हीन विचार किसने दे दिया। जिन लोगों ने ऐसा विचार दिया उन्होंने भारत के साथ बड़ा अन्याय किया।

भले ही हम उनका नाम न जानते हों, भले ही न पहचानते हों, पर जैसे–जैसे युग बीतेगा, मानव के भीतर चीत्कार उठेगा कि अपने करोड़ों लोगों को अलग करने का दुष्चक्र अपने ही लोगों की शास्त्रीय व्याख्या के कारण चला। नहीं तो कैसे सम्भव था कि उसी समाज के लोग अपने चतुर्थ वर्ग के बन्धु को कुएं से पानी भरने का अधिकार न दें? जूते पहन कर चलने का अधिकार न दें। जब वे चलें तो डंडा बजाकर उद्घोषणा करते हुए चलें कि शूद्र आ रहा है। मैं समझता हूँ, अपने समाज ने उन ऋषियों का अपमान किया है जिन्होंने तमाम जातियों को अपने गले लगाया। अपनी उदारता सारे संसार को बताने का प्रयास किया।

भारत की अपनी विशेषता है कि वह जब ज्ञान की सर्वोच्च भूमिका में निवास करना चाहता है, ज्ञानमय जीवन व्यतीत करना चाहता है, वहाँ द्वैत की कल्पना अपने आप समाप्त हो जाती है। कोई अछूत है, यह विचार कहाँ रह जाता है? दुनिया के किसी धर्म में, देश में, यह बात नहीं की गई जो भारत में कही गई। भारतीय शेष पृष्ठ 11 पर

# ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 6 का

## विश्वभर में भारतीय दर्शन.....

छाप छोड़ी थी। ईसाई मिशनरियों के कार्यकलाप से भी उन्हें बहुत प्रारम्भ में ही वितृष्णा हो गई थी। इस किताब में, वाई.वी. कुमार दास की उस थीसिस से, जो मद्रास यूनिवर्सिटी में अप्रकाशित रखी है और जिसका शीर्षक है–'प्रोटेस्टेंट मिशनरी : इम्पैक्ट एण्ड क्वेस्ट फार नेशनल आइडेंटिटी', ऐसे अनेक उद्धरण दिये गये हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि ईसाई धर्म के प्रचारकों ने अपने द्वारा प्रकाशित साहित्य के माध्यम से भारतीय ईसाइयों को यह स्पष्ट निर्देश दिया था कि वे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता–आन्दोलन का समर्थन न करें। डॉ. गोपाल ने सप्रमाण इस बात का उल्लेख किया है कि ईसाई नौकरशाह, मिशनरी और ईसाई जातिवादी–सभी उस समय स्वतन्त्रता के घोर विरोधी थे। नोबल पुरुस्कार पाने के बाद, जब पश्चिमी देशों में गुरुदेव रवि ठाकुर पर पश्चिमी प्रभाव के दावे जोर–शोर से किये जा रहे थे, उस समय डॉ. राधाकृष्णन् ने ही उनका खण्डन निर्भीकतापूर्वक किया और यह युक्तिपूर्वक सिद्ध किया कि उन पर हिन्दुत्व और विशेषतः वेदान्त का ही मूलगामी प्रभाव है। डॉ. राधाकृष्णन् की शिक्षा–दीक्षा यद्यपि ईसाई मिशनरियों के स्कूलों में ही मुख्यतः सम्पन्न हुई थी, उनके गुरुजनों में भी ईसाइयों का बाहुल्य था, फिर भी इस (२०वीं) शती के आरम्भ में, ईसाई मिशनरियों के द्वारा हिन्दू धर्म पर किये जा रहे आक्रमणों के विरोध में वे खुलकर खड़े ही नहीं हो गये थे; बल्कि प्रत्याक्रमण की मुद्रा में भी आ गये थे। के.सी. चाको को लिखे गए एक पत्र में उन्होंने ईसाइयों के हमलों का जोरदार विरोध करने का आह्वान किया है। उन्होंने ईसाई मिशनरियोंं के द्वारा किये जा रहे धर्मान्तरण का विरोध करते हुए कहा है कि धर्मान्तरण की कोई आवश्यकता नहीं है–आवश्यकता है विभिन्न धर्मों में निहित अच्छी बातों को समझने की (मैसूर यूनिवर्सिटी मैग्जीन, १९२३, पृष्ठ १८७–९८)। एम.ए. में उन्होंने वेदान्तनिष्ठ आचार–दर्शन पर शोधप्रबन्ध लिखा, जिसमें उन्होंने यह कहने में संकोच नहीं किया कि भारतीय विचारक अत्यन्त पुरातनयुग में भी गहन दार्शनिक विवेचना में संलग्न थे, जब अन्य देशों के लोग केवल कच्चा पशु–मांस भर खाना सीख पाये थे। इस सन्दर्भ में उन्होंने स्वयं ईसा मसीह के विषय में भी सच बात कहने में संकोच नहीं किया। शांकर वेदान्त को वे दर्शन की पराकाष्ठा समझते थें–उनके अनुसार केवल यही वह सम्पूर्ण दर्शन है, जिसमें धर्म, तत्त्वमीमांसा और सदाचार का समुचित समन्वय है। उन्होंने अपने गुरुजनों के उस निर्देश को मानने से इनकार कर दिया था, जिसके अनुसार केवल ईसा मसीह को ही सर्वोपरि सिद्ध करना था–यद्यपि वे जानते थे कि उनके शोधप्रबन्ध का परीक्षण मुख्यतः ईसाई गुरुजन ही करेंगे। उन्होंने हिन्दू धर्म को दकियानूसी और पुराणपन्थी न मानते हुए, हिन्दू परम्परा में निहित श्रेष्ठ आध्यात्मिक मूल्यों और समाज–सेवा के उदात्त आदर्शों को उजागर किया। लेकिन हिन्दू समाज की जाति–प्रथा के वे विरोधी थे।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 8 का

## महाराणा प्रताप जयन्ती.....

उठ खड़ा हुआ और चावल के कुछ दाने पगड़ी में रखता हुआ बोला कि 'तुम्हारे सम्मान के लिए हमने अपने सम्मान को खाक में मिलाया, अपनी बहनें और बेटियाँ तुर्कों को दीं। लेकिन यदि तुम्हारी यही इच्छा है, तो ऐसा ही सही। अब इस देश में तुम न रह सकोगे। यदि मैं तुम्हारे अभिमान को चूर–चूर न कर दूँ तो मेरा नाम मानसिंह नहीं'। इसी समय राणा प्रताप दरवाजे से निकलकर आये और शान्ति से बोले कि "मैं तुमसे भेंट करने को बिल्कुल तैयार रहूँगा।" इसी समय किसी मजाकिये ने फबती उड़ाई कि "अपने फूफा (अकबर) को लाना न भूलिएगा।" क्रोध से अंगार बना हुआ मानसिंह वहाँ से चला गया और राणा की आज्ञा से वह स्थान खोदकर और धोकर पवित्र किया गया।

### हल्दीघाटी युद्ध का रोमांचक क्षण (१५७६ ई.)

इस प्रकार हल्दीघाटी की प्रसिद्ध लड़ाई का सूत्रपात हुआ। मानसिंह ने अपना वचन पूरा किया। कुछ ही महीने बाद राणा ने सुना कि प्रसिद्ध सेनापति महावतखाँ, आसफखाँ और अपने फूफा के लड़के सलीम (भावी जहाँगीर) को लेकर मानसिंह अरावली पर्वत की घाटियों में उतर रहा है। शाही सेनाओं में मुगल, राजपूत और पठान योद्धाओं के साथ विशाल तोपखाना था। इस शानदार समारोह का सामना करने के लिए राणा प्रताप के पास २० हजार बहादुर राजपूत थे और निडर हृदय था। उसी हृदय और धर्म के बल पर खोखले खजाने का स्वामी प्रताप असंख्य धन के स्वामी अकबर की विजयिनी सेना से टक्कर लेने के लिए उद्यत हो गया। मुगल सेनायें अरावली के दक्षिण भाग में सिर उठाकर खड़े हुए गोगुण्दा नाम के किले को लेने के उद्देश्य से आगे बढ़ीं। गोगुण्दे को जो रास्ता जाता है, वह हल्दीघाटी में से होकर गुजरता है। राणा प्रताप ने अपनी सेनाओं का उसी स्थान में संग्रह किया था। घाटी के सामने चुने हुए राजपूत घुड़सवारों के साथ स्वयं राणा विराजमान थे। पहाड़ों की चोटियों और रास्तों पर भील लोग तीर कमान और पत्थर लेकर खड़े हुए थे। मुगल–सेना आगे बढ़ी, राजपूतों ने रास्ता रोका। दोनों में भीषण संग्राम छिड़ गया। दोनों ओर जनसंहार होने लगा। राजपूत सरदार अपने कुल–गौरव और धर्म के नाम पर आगे बढ़–चढ़कर वार करने लगे। राजपूतों की वीरता देखकर दुश्मन दंग रह गये। वे जी तोड़कर लड़े। परन्तु तोपखाने और कई गुना सिपाहियों के सामने उनकी क्या चलती। राणा प्रताप इस दशा को सहन न कर सके। उस वीर ने एक ही हाथ में संग्राम जीत लेने का निश्चय किया और स्वामिभक्त चेतक के ऐड़ लगाई। चेतक अपने वीर सवार को लेकर मुगलों की सेना को चीरता हुआ आगे बढ़ने लगा। राणा का लक्ष्य मानसिंह के हाथी तक पहुँचकर उस को यमलोक पहुँचाना था। दायें और बायें तेजी से वार करते हुए राणा आगे ही बढ़ते जा रहे थे। मुगल सेना सेनापति की रक्षा के लिए टूट पड़ी। उधर राजपूत सरदार राजपूताने की शान को शत्रुओं से घिरता हुआ देखकर प्राणों की ममता छोड़कर आगे बढ़ने लगे। शत्रु और मित्र में पहचान करना कठिन हो गया। मुसलमान इतिहास लेखक बदायूँनी भी दर्शक के रूप में मुगल सेना के साथ आया था। उसने अपने सेनापति आसफखाँ से जाकर पूछा कि शत्रु और मित्र की पहचान कठिन हो रही है। ऐसे समय में यह कैसे जाना जाये कि अपना राजपूत कौन सा है और पराया कौन सा? आसफ खाँ ने उत्तर दिया कि "तुम राजपूतों को गोली मारते जाओ, वह अपना हो या पराया, काफिर किसी का भी मरे इस्लाम के लिए अच्छा है।" इस प्रकार जहाँ राणा के राजपूतों का नाश मुसलमानों और मानसिंह के राजपूतों ने मिलकर किया, वहाँ मुसलमान सिपाहियों ने दोनों ओर का नाश करके जन्नत का रास्ता साफ किया।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 1 का

## अखिल भारत हिन्दू महासभा.....

उम्मीदवार प्रज्ञा सिंह ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी वध करने वाले नाथूराम गोडसे को देशभक्त बताया था। प्रज्ञा ने कहा था कि नाथूराम गोडसे देशभक्त थे, देशभक्त हैं और देशभक्त रहेंगे। प्रज्ञा ने कहा था किश नाथूराम गोडसेको आतंकवादी कहने वाले लोग अपने गिरेबां में झांक कर देखें। ऐसे लोगों को इस चुनाव में जवाब दे दिया जाएगा। हालांकि देर रात उन्होंने पार्टी के दबाव में इस बयान पर माफी मांग ली। बता दें कि प्रज्ञा से अभिनेता कमल हासन के बयान पर प्रतिक्रिया मांगी गई थी। दरअसल, कमल हासन ने नाथूराम गोडसे को आजाद भारत का पहला हिन्दू आतंकवादी करार दिया था।

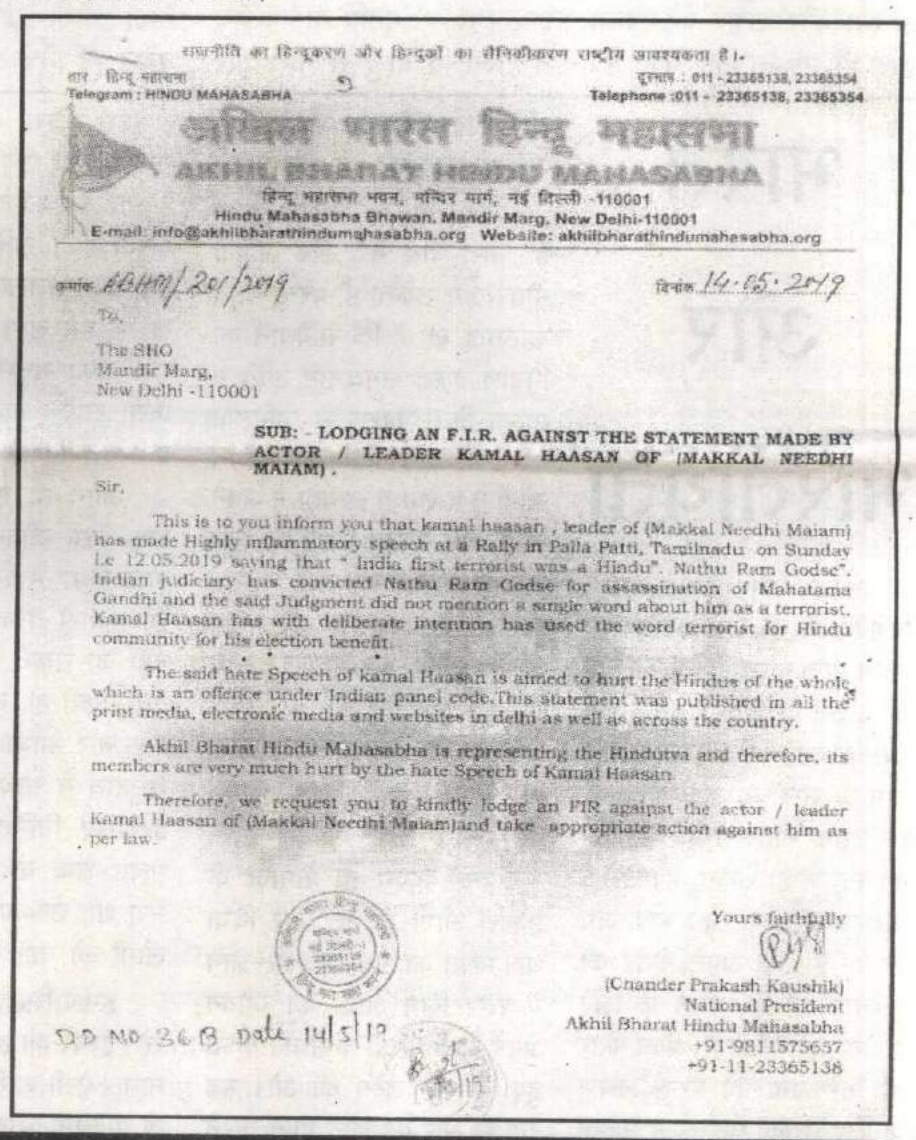

राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण राष्ट्रीय आवश्यकता है।

तार : हिन्दू महासभा
Telegram : HINDU MAHASABHA

दूरभाष : 011 - 23365138, 23365354
Telephone :011 - 23365138, 23365354

अखिल भारत हिन्दू महासभा
AKHIL BHARAT HINDU MAHASABHA

हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली -110001
Hindu Mahasabha Bhawan, Mandir Marg, New Delhi-110001
E-mail: info@akhilbharathindumahasabha.org Website: akhilbharathindumahasabha.org

क्रमांक ABHM/201/2019 दिनांक 14.05.2019

To,

The SHO
Mandir Marg,
New Delhi -110001

**SUB: - LODGING AN F.I.R. AGAINST THE STATEMENT MADE BY ACTOR / LEADER KAMAL HAASAN OF (MAKKAL NEEDHI MAIAM).**

Sir,

This is to you inform you that kamal haasan , leader of (Makkal Needhi Maiam) has made Highly inflammatory speech at a Rally in Palla Patti, Tamilnadu on Sunday i.e 12.05.2019 saying that " India first terrorist was a Hindu". Nathu Ram Godse". Indian judiciary has convicted Nathu Ram Godse for assassination of Mahatama Gandhi and the said Judgment did not mention a single word about him as a terrorist. Kamal Haasan has with deliberate intention has used the word terrorist for Hindu community for his election benefit.

The said hate Speech of kamal Haasan is aimed to hurt the Hindus of the whole which is an offence under Indian panel code.This statement was published in all the print media, electronic media and websites in delhi as well as across the country.

Akhil Bharat Hindu Mahasabha is representing the Hindutva and therefore, its members are very much hurt by the hate Speech of Kamal Haasan.

Therefore, we request you to kindly lodge an FIR against the actor / leader Kamal Haasan of (Makkal Needhi Maiam)and take appropriate action against him as per law.

Yours faithfully

(Chander Prakash Kaushik)
National President
Akhil Bharat Hindu Mahasabha
+91-9811575657
+91-11-23365138

DD NO 36B Date 14/5/19

# हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 4 का **उपयोगी बादाम और.....**

साफ होती हैं तथा चेहरा दमकने लगता है। यह वात–ज्वर को भी दूर करती है। दिमाग में तरावट लाती है तथा कमजोरी दूर होती है। काली मिर्च को घी में डालकर खाने से पित्त का प्रभाव खत्म होता है तथा इससे मूत्रावरोध भी दूर होता है। इसके सेवन से गैस विकार भी नष्ट होता है। काली मिर्च का सेब के साथ सेवन किया जाए, तो पलित रोग में लाभ होता है। कबावचीनी के साथ इसका सेवन करने से सुजाक, शुक्रमेह, अर्श आदि रोग नष्ट होते हैं।

आयुर्वेद में काली मिर्च को अण्डकोष के लिए लाभकारी बताया गया है। काली मिर्च को ताजा घी के साथ कुछ दिनों तक चाटने से पलकों की सूजन दूर होती है तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है। इसका सेवन करने से हिचकी तथा सिर दर्द भी दूर होता है। अगर काली मिर्च को शहद के साथ सेवन किया जाए, तो खाँसी, दमा और छाती के दर्द में लाभ होता है। यह फेफड़ों में जमा कफ को बाहर निकाल फेंकती है, यह पेट के कीड़ों को मारती है। इसे गले के लिए हानिकारक बताया गया है। गुर्दे के रोगी को इसका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इसे दूध, शहद और चावल के साथ लेने से इसे अवगुण दूर होते हैं।

शेष पृष्ठ 9 का **गीता का निष्काम कर्म.....**

बना देते हैं। यह अनुभव दुर्लभ नहीं है कि अशुद्धचेता साधक को श्रवण करने मात्र से ब्रह्मविद्या फलवती नहीं होती। ज्ञान प्राप्ति के लिए वेदोक्त सकाम कर्म करके पहले चित्त की शुद्धि की आवश्यकता है। परमाचार्य श्री रामानुज ने अपने श्रीभाष्य में **विहितत्वाच्चा श्रमकर्मापि (३/४/३२) तथा सहकारित्वेन च (३/४/३३)** सूत्रों में आश्रम–कर्मों के पालन को ब्रह्मविद्या की प्राप्ति में साधन माना है। **मुण्कोपनिषद्** (२/१/६) के अनुसार भी परमात्मा से ही (वेदों की) ऋचायें, साम, यजुः, दीक्षा, सभी यज्ञ, क्रतु, दक्षिणा, संवत्सर, यजमान, लोक और जहाँ तक चन्द्रमा पवित्र करता है और सूर्य तपता है, वे लोक उत्पन्न हुए हैं। वेद और उनमें प्रतिपादित कर्मों का विधान परमात्मा द्वारा ही बनाये गए हैं। वेदों में सकाम के साथ–साथ निष्काम कर्मों की भी चर्चा है।

'वेद' शब्द उस शुद्ध ज्ञान का द्योतक है, जो परमात्मा से प्रकट हुआ है। वेद साक्षात् भगवद्रूप ही माने जाते हैं और शास्त्र भगवान को भी वेदरूप बतलाते हैं। यस्य निश्वसितं वेदाः अर्थात् वेद भगवान के निःश्वास हैं। वेदों में सकाम भाव वाले कर्मकाण्ड के मन्त्रों की संख्या अस्सी हजार है–जबकि सोलह हजार मन्त्र उपासना काण्ड के और चार हजार निष्काम कर्म वाले ज्ञानकाण्ड के हैं।

गीता के समान निष्काम कर्म और अनासक्ति का उपदेश देने वाले अनेकों वचन वेदों में मिलते हैं। तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति यज्ञेन तपसानाशके न (**बृहदारण्यक उपनिषद् ४/४/२२**) अर्थात् आत्मा को ब्राह्मण लोग वेदों के स्वाध्याय से तथा यज्ञ, ज्ञान और निष्काम तप के द्वारा जानने की इच्छा रखते हैं। श्रुति के इस वचन में 'अनाशकेन' शब्द का अर्थ है कामना रहित। भगवान् ने गीता में वेदों के वचनों को ही दोहराया है, अतः गीता के किसी वचन को वेद निन्दा कहना सर्वथा अनुपयुक्त है।


## साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

**विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं**

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

**हमारा संकल्प**

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

*केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।*
*आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।*


शेष पृष्ठ 2 का **हरियाणा का सुन्दर पर्यटन.....**

मक्खन मिश्री। उड़द की दल और रोटी थी। सब्जी अचार तो हमारे साथ था। चौकीदार जी कहने लगे–"साब, यहाँ कोई ऐसा आता ही नहीं जो दिन भर ठहरे। यहाँ जो आते भी हैं तो घंटे आधे घंटे यमुना के किनारे बैठ घूम कर चले जाते हैं। कभी चाय पी लेते हैं। इसलिए साब हम हरी सब्जी सलाद नहीं रखते।" किन्तु अब इस विश्राम भवन में चाय कॉफी, नाश्ता, भोजन और रात्रि विश्राम की व्यवस्था भी हो गई है। वह टूटी नाव भी अब वहाँ से हटा दी गई है। दोपहर की प्यारी धूप में पत्थरों पर बैठ हम दाल रोटी अचार खा रहे थे। कभी–कभी बुलबुल का संगीत कानों में पड़ जाता। यमुना धारा का मंद गति स्वर हमारे कोलाहल में डूब जाता था। जब सब विश्राम में लेट गए तब उस शांत सौंदर्य को मैं देर तक पीती रही। दूर से बहती आ रही यमुना को निहारती रही। कूलों पर झुके वृक्ष और जल में नहाते नन्हे पत्थर अतुलनीय सुन्दरता बिखेर रहे थे। हरियाणा की उद्योग नगरी यमुना नगर–जगाधरी से मात्र ३० किमी. पर यह सुंदर स्थान है। हरियाणा का यमुना पर बना सबसे पुराना बांध ताजेवाला है। ३–४ किमी. पहले ही पड़ता है। अब हरियाणा सरकार ने इसे पर्यटन स्थल बना दिया है। यहाँ विश्राम भवन का सुंदर उद्यान भी है। फिर भी बहुत कम सैलानी यहाँ पहुँचते हैं। शायद यह स्थान जगाधरी पांवटा साहिब मुख्य मार्ग से करीब ३ किमी. दाईं ओर अंदर मुड़कर है, इसलिए यहाँ पर्यटकों की पहुँच बहुत कम है। अपना वाहन होने पर तो सुविधा है अन्यथा इधर के गाँवों में आने वाली बसों में बैठकर ही आना पड़ेगा या मुख्य सड़क पर उतर पैदल चलकर आएँ। संध्या समय पक्षियों का कोलाहल बढ़ गया था। गायों का एक झुंड यमुना जल पीने उतर आया था। हम गोपिकाओं की तरह उनके पीछे दोड़े। एक कृष्ण युग उतर आया था यमुना किनारे। साथ के कृष्ण ने हमें कैमरे में कैद कर लिया।

गोधूलि संग हम विदा हो गए। श्याम जल अधिक कृष्ण हो गया था। किनारे के छोटे पत्थर ओझल होने लगे थे। दूर तक जाते हुए हमें नाव और खाट दीख रही थीं। यमुना धारा का संगीत भी डूबता जा रहा था। न हाथी था, न कुण्ड, किन्तु हम 'हथिनी कुण्ड' में तन–मन से डूब कर लौट रहे थे।

शेष पृष्ठ 9 का **भारत और भारतीयता.....**

धर्म के उन्नायकों ने अपने समाज में मिलाने के साथ उदार दृष्टि भी दी और कहा–

**अयं निजः परोवेत्ति गणना लघु चेतसाम्।**
**उदार चरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम्।।**

यह भारतीय भूमि का चिन्तन है जिसने यह मेरा है, यह तेरा है ऐसे चिन्तन को बार–बार मिटाकर वैश्विक परिवार की कल्पना विश्व में सबसे पहले भारत ने ही दी। भारतीय भूमि पर भारतीय मनीषी के द्वारा दी गई। ऐसा उदारपूर्ण दृष्टिकोण भारत ने न दिया होता तो सम्भवतः हम लोग जीवित न रह पाते। बहुत लोग मरे। बहुतों की हत्याएँ हुई। यज्ञोपवीत की होलियाँ जली और स्मृतियाँ फूँकी गईं। रामायण की होली जलाकर लोगों ने तापा। इतना सब होते हुए भी भारतीय मनीषा का सुन्दर पक्ष था। जो सम्पूर्ण संसार को अपना परिवार मानता है। वह भारतीय पक्ष इन समस्त अत्याचारों से समाप्त नहीं किया जा सकता। एक मुसलमान कवि ने लिखा कि वह गंगा के मुहाने में आकर डूब गया। उसका बहुत प्रयत्न था कि भारत को पूरी तरह से अन्य देशों की तरह मिटा दिया जाता, धर्म परिवर्तन कर दिया जाता, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। एक ओर वैचारिक श्रेष्ठता और बलिदानियों की श्रेष्ठ परम्परा ने हम सबको जीवित रखा।

शेष पृष्ठ 1 का **अमेरिका ने कहा कि वह.....**

है। इससे पहले अंतर्राष्ट्रीय मीडिया की जो रिपोर्ट सामने आई थी। जिसमें अमेरिकी अधिकारियों ने दावा किया था कि, जिस तरह फारस खाड़ी से बाहर ईरानी समर्थित सैन्य बलों के लिए जहाजों का मूवमेंट हो रहा है वो ईरान के पुराने परिवहन पैटर्न से मिलता–जुलता नहीं है। यह रिपोर्ट अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव से पैदा हुए खतरे के आकलन का भाग है। गौरतलब है कि, अमेरिका और ईरान के बीच परमाणु हथियारों को लेकर तनाव बना हुआ है। बीते दिनों ईरान पर प्रतिबंध लगाते हुए अमेरिका ने कई देशों को उनसे कारोबारी रिश्ते तोड़ने को कहा था जिसमें भारत भी शामिल है। अमेरिका ने भारत के ईरान से तेल खरीदने की छूट को भी समाप्त कर दिया था।


**-: तत्काल ग्राहक बनें :-**

***सदस्यता शुल्क***

**वार्षिक.....150/- रुपये**
**द्विवार्षिक.....300/- रुपये**
**आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये**

**ड्राफ्ट या मनीआर्डर**
**"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।**

***पता :-*** **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

***नोट :-*** **केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)-11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77



## यह भी सच है

# हिन्दू धर्म को मिटाने का यह एक खुला षड्यंत्र है

### गौ हत्या व संत उत्पीड़न से यह देश बर्बाद हो जाएगा

**जिस** देश में 'गाय' को माँ जैसा सम्मान दिया जाता रहा है, जिस देश में भगवान ने स्वयं कृष्णावतार के समय गौ-सेवा करके एक स्वस्थ व समृद्ध देश के लिए 'गाय' की उपयोगिता समझाने का प्रयत्न किया किया था, आज वही भारत देश गौ-माँस का एक बहुत बड़ा निर्यातक देश बन गया है। आज गायों व अन्य पशुओं को कत्ल करने के लिए एक आटोमेटिक कत्लखाना लगाने के लिए सरकार लगभग ९० करोड़ रुपये तो प्रोत्साहन राशि दे रही है, इसके अतिरिक्त भी सरकार बीच-बीच में उनको अपना कत्लखाना दुरुस्त रखने के नाम पर और भी सहायता-राशि बाँटती रहती है। अभी हाल ही में सरकार ने कुछ कत्लखानों को लगभग ५० करोड़ रुपये साफ-सफाई व मेनेजमेंट के नाम पर बाँट दिए हैं। इन कत्लखानों को कच्चे माल की सप्लाई यानि रोजाना कत्ल के लिए गाय व बछड़े लगातार निर्बाध गति से मिलते रहें, उनको रास्ते में कोई बिल्कुल भी रोक-टोक ना कर सके, इसके लिए देश के प्रधानमंत्री महोदय ने स्वयं गौ-रक्षकों को 'गुन्डा' घोषित करके सभी राज्य सरकारों को उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने के आदेश भी जारी करवा दिए हैं। देश में हिन्दुओं को आज धड़ाधड़ ईसाई बनाया जा रहा है। ईसाई मिशनरियों के इस काम में सबसे बड़ी बाधा बन रहे हिन्दू संत पूज्य आशाराम जी बापू जी को एक षड्यंत्र रच कर ताउम्र के लिए कारागार में भेज दिया गया है। आज गौ-हत्या व हिन्दू संत-उत्पीड़न मात्र यह दो ही ऐसे काम रह गए हैं, कि जहाँ कांग्रेस व भाजपा दोनों पूरी तरह से एकमत व सहमत दिखाए पड़ रहे हैं। इन कार्यों में दोनों एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर काम कर रहे हैं मैं पिछले दिनों यू.एन.ओ. की एक संस्था की रिपोर्ट पढ़ रहा था, उसमें बताया गया है कि आज भारत में मिलावटी दूध बहुत बड़ी मात्रा में बिक रहा है, जिसके कारण वर्ष २०३० तक भारत में कैंसर के रोगियों की संख्या विश्व में सबसे ज्यादा हो जाएगी। इसका अर्थ यह हुआ कि लगभग ५०-६० रुपये लीटर मूल्य हो जाने के कारण गरीब परिवारों के बच्चों के मुँह से दूध तो हमारी सरकार पहले ही छीन चुकी है, अब जो दूध पी भी पा रहे हैं, उन्हें भी मिलावटी दूध पिलाकर कैंसर की ओर धकेला जा रहा है। तो अब यह इस देश के लिए कौन सी बढ़िया आर्थिक नीति या होशियारी की बात हुई कि आज तो गाय का माँस बेचकर करोड़ों-अरबों कमा लें और कल के लिए हम एक बीमार व कैंसर ग्रस्त भारत बना दें। आज गाय को बेच-बेच कर ऐश उड़ा रहे नेताओं व कसाई किस्म के व्यापारियों, यह भी तो याद रखो कि इसी देश में तुम्हारी आने वाली पीढ़ियों को भी तो रहना है, कम से कम कुछ उन पर तो दया करो।

**अशोक पंडित**

# पाकिस्तान में हिन्दू लड़कियों का जबरन धर्मांतरण

**इंकलाब (२५ मार्च)** के अनुसार पाकिस्तान के सिंध प्रांत में दो अल्पव्यस्क हिन्दू लड़कियों का अपहरण करके उनका जबरन धर्मांतरण किया गया। इसके बाद जबर्दस्ती उनका निकाह भी करा दिया गया। भारत सरकार ने इस सम्बन्ध में पाकिस्तान स्थित भारतीय राजदूत से विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। पाकिस्तान के मंत्री फवाद चौधरी ने कहा है कि हमारा अपना मामला है। उन्होंने कहा है कि आप पहले भारत में रहने वाले अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए प्रयास करें। फवाद चौधरी ने कहा है कि जहां तक इस घटना का संबंध है हम इसकी जांच कर रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार दो बहनों का अपहरण करके उन्हें जबरन मुसलमान बनाया गया और इसके बाद मुसलमानों से उनका निकाह करा दिया गया। मीडिया में हंगामा मचने के बाद पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने यह निर्देश दिया है कि इन दोनों नाबालिग लड़कियों को बरामद किया जाए और उन्हें न्यायालय में पेश किया जाए।

## कबिरा खड़ा बजार में

### चुनाव आयोग में आपसी कलह लोकतंत्र के लिए घातक

**पिछले** दिनों चुनाव आयोग के भीतर जो अर्न्तकलह हो गई है उससे लोकतंत्र को नुकसान हो रहा है। यह कहना है अखिल भारत हिन्दू महासभा का। तीसरे आयुक्त अशोक लवासा ने ४ मई को मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा को पत्र लिखा है। उसमें कहा है कि उन्हें मजबूर किया जा रहा है कि आयोग की संपूर्ण बैठक में शामिल न हो। उनकी असहमतियों को दर्ज नहीं किया जा रहा है। संपूर्ण बैठक में तीनों आयुक्त शामिल होते हैं। हर बात दर्ज की जाती है। मगर यह खबर हर भारतीय को परेशान कर रही है कि आयोग के भीतर कहीं कोई खेल तो नहीं चल रहा है। अशोक लवासा ने प्रधानमंत्री के खिलाफ की गई शिकायतों के फैसले में भी असहमति दी थी। आयोग पर सवाल उठा था कि वह आचार संहिता के उल्ल्घंन के मामले में प्रधानमंत्री का बचाव कर रहा है। अशोक लवासा ने अपने पत्र में लिखा है कि आयोग की बैठकों में मेरी भूमिका अर्थहीन हो गई है क्योंकि मेरी असहमतियों को रिकॉर्ड नहीं किया जा रहा है। मैं अन्य रास्ते अपनाने पर विचार कर सकता हूं ताकि आयोग कानून के हिसाब से काम कर सके और असमहतियों को रिकार्ड करे। अगर कोई चुनाव आयुक्त कह रहा है कि आयोग कानून के हिसाब से काम नहीं कर रहा है तो जनता कैसे अपना भरोसा इस आयोग में व्यक्त कर सकती है।चुनाव आयुक्त अशोक लवासा का यह पत्र हल्के में नहीं लिया जा सकता है। वैसे ही तमाम तरह के आरोप चुनाव आयोग पर लग रहे हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा ने कहा है कि इस तरह के आरोप एक स्वतंत्र संस्था पर लगाना पूर्णतया गलत है। इससे देश की छवि खराब होती है और लोकतंत्र कमजोर होता है। अशोक लवासा के इस पत्र के बाद मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा ने बैठक बुलाई मगर कोई नतीजा नहीं निकला है। सुनील अरोड़ा के तर्क हैं कि सिर्फ क्वासी ज्यूडिशियल मामलों में अल्पमत की राय रिकॉर्ड की जाती है। आचार संहिता के उल्लंघन पर जो फैसला दिया है वह अर्ध न्यायिक किस्म का नहीं है। हम सब जानते हैं कि ऐसी संस्थाओं की बैठकों में मिनट्स दर्ज होते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा है कि कैबिनेट की बैठक का मिनट्स रिकार्ड होता है और उसे मंजूर किया जाता है। चुनाव आयोग को अपनी भूमिका को लेकर सतर्क रहने की जरूरत है। यह लोकतंत्र के भविष्य का सवाल है। यह समान्य घटना नहीं है। एक आयुक्त लिख रहा है कि चुनाव आयोग कानून से नहीं चल रहा है। किसी भी चुनाव आयुक्त को इस तरह की सार्वजनिक बयानबाजी से बचना चाहिए ताकि संस्थान की मर्यादा बरकरार रह सके।

**वीरेश त्यागी**
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)-11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 29 मई से 04 जून 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।